चन्दामामा
नवम्बर १९८९
3 RS

रामानन्द सागर कृत
रामायण
चित्र-कथा
१२ विभागों में । हिंदी और अंग्रेज़ी में ।
रामायण
प्रति विभाग का मूल्य ५ रुपये
चन्दामामा
विजया कम्बाइन्स
१८८, एन.एस.के. मार्ग, वडपलनी,
मद्रास ६०० ०२६ द्वारा प्रकाशित
अनुमति प्राप्त
सागर एन्टरप्राइजस
नटराज स्टुडिओज, १९४ अंधेरी कुर्ला रोड, मुंबई-४०० ०६९.
ग्रंथ-क्रमांक ३ अब समाचारपत्र-विक्रेताओं के पास उपलब्ध

नये डायमंड कॉमिक्स में
पेश करते हैं
कार्टूनिस्ट प्राण का
प्राण
दाबू और शीरी
प्राण
अंकुर का फुटबाल
फौलादी सिंह और अंतरिक्ष का महात्मा
पलटू और अनमोल तितली
चाचा भतीजा और चार चोर
मामा भांजा और मूर्ख होशियार सिंह
ताऊ जी और सोनपरी का अपहरण
राजन इकबाल-11
श्रीमद् भगवद् गीता
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :-
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित—यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम ..........
पिता का नाम .......... जिला ..........
पता ..........
डाकखाना ..........
डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

# 4 साहसी भारतवासी

धुन के पक्के चार यार — मुखिया है यूसुफ़, ज्ञानी हैं गुरुस्वामी, खोजी हैं नैन्सी और बहादुर हैं परम, हरदम जोखिम उठाने और बुराई से भिड़ने को तैयार.

तीन दिन हो गये और अभी तक साइबेरियाई सारसों के आने के कोई आसार नहीं.

...वे 5,000 किलोमीटर सफ़र करके आते हैं यहां... सूरज, पहाड़ों और झीलों की मदद से उनकी यात्रा तय होती है. उनकी आवाज़ आप तीन किलोमीटर दूर से सुन सकते हैं...

देखो! आ रहे हैं सारस.
लेकिन वे उतरेंगे नहीं. वे वापस जा रहे हैं.
रंबा हो! हो! हो!
हो! हो!
परम, मेरे साथ चलो, चुप कराते हैं इन-
भाई साहब, यह शोर बंद कीजिए, प्लीज़! चिड़ियां डर के मारे भाग रही हैं.
!!
अरे भाई साहब-वाई साहब कुछ नहीं! देखिए अगर आपने यह फ़ौरन बंद नहीं किया तो सीधे जेल की हवा खायेंगे. मैंने कह दिया.
वह ठीक कहती है. यह कानून है.
कानून तो ठीक है. पर जब तक हम सब मिलकर कार्यवाही नहीं करेंगे तो कुछ नहीं होगा.
यही तो तुमने अभी साबित किया है...
देखो, चिड़ियां वापस आ रही हैं... कितनी शांत... कितनी शानदार.... वे उतर रही हैं.
शुक्रिया, साहसी बच्चों!
अपना भारत सुन्दर
तुम्हें भी अपने पर्यावरण को नासमझ लोगों के हाथों बरबाद होने से बचाना चाहिए. हम मिल-जुल कर काम करेंगे तो भारत की सुंदरता को हमेशा के लिए बनाए रखेंगे.
HTA 6401HIN
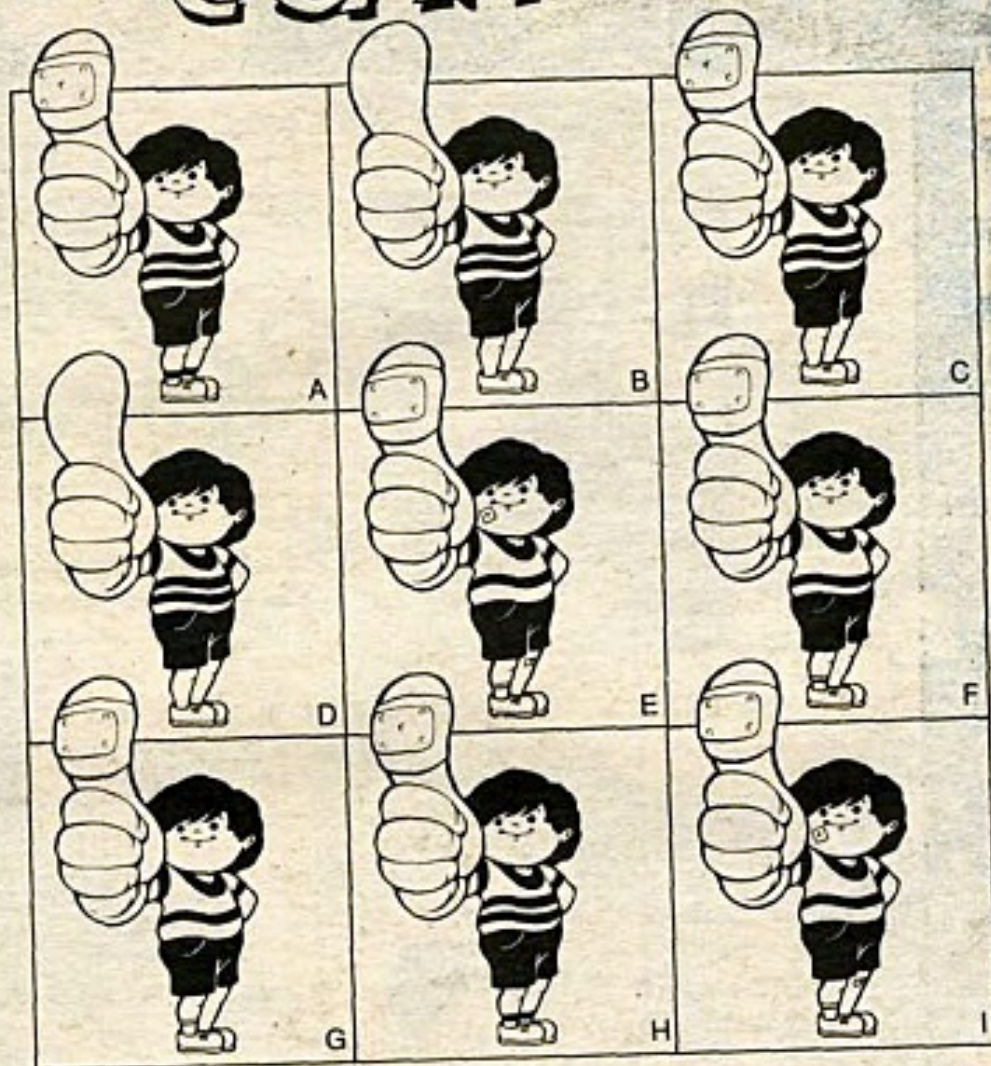
# चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

## उत्तुंग शिखरों की शांति बनी रहे !

भारत और पाकिस्तान के सीमा प्रांत का पहाड़ी प्रदेश आज के समाचारों में नित्य उल्लेखित होता है और सब का ध्यान आकर्षित करता है। अगर भारत और पाकिस्तान में दुर्भाग्यवश पुनः युद्ध छिड़ गया, तो ६००० मीटर ऊँचा सियाचिन विश्व का सब से ऊँचा युद्ध-क्षेत्र बनने का खतरा है। अभी अभी उस प्रदेश का संदर्शन करके लौटे एक मित्र ने कहा–"इस प्रदेश में दोनों देशों के सैनिक हर क्षण एक दूसरे को देखते हुए डरते रहते हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच अगर मित्रता और प्रेम के संबंध बने रहेंगे तो ऐसी स्थिति नहीं रहेगी।"

वास्तव में हमारे सैनिक विशेष दक्षता के साथ साहसपूर्वक इस सीमा-प्रदेश की सुरक्षा कर रहे हैं।

इस शांतिपूर्ण प्रदेश की शांति बनाए रखने के लिए शीघ्र ही भारत और पाकिस्तान आपस में चर्चा करनेवाले हैं। हम आशा करें कि यह चर्चा सफल हो और मानव की महानता के प्रतीक के रूप में ये ऊँचे पर्वत नित्य सुशोभित रहें।

वर्ष : ४२ नवम्बर १९८९ अंक : ३
एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००

## चन्दामामा के संवादः

### जॉब चार्नाक याद है?

आज विश्व के महानगरों में कलकत्ता एक महानगर माना जाता है। लेकिन ३०० साल पहले वहाँ क्या था? जहाँ तक दृष्टि जा सकती है, वहाँ तक धान के खेत, हरे-भरे मैदान और रेतीले टीलों के बीच जहाँ-तहाँ थोड़े से गाँव बसे थे। इन तीन सौ वर्षों के दौरान इस प्रदेश में कैसा महान् परिवर्तन हुआ है!

सन १६९० में जॉब चार्नाक नामक एक अंग्रेज युवक हुगली नदी के तट पर पहुँच गया। ईस्ट इंडिया कंपनी के बारे में हम सब भली भाँति जानते ही हैं। ब्रिटन में स्थापित एक व्यापार-संस्था है यह। व्यापार के नाम पर हमारे देश में प्रवेश करके ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने राजनैतिक षड्-यंत्रों युद्धों तथा धमकियों से धीरे धीरे हमारे देश के अनेक राज्यों को अपने अधीन कर लिया। इस कंपनी ने ही जॉब चार्नाक को हुगली नदी के तट पर भेज दिया था।

१४ अगस्त १६९० को जॉब चार्नाक ने कलकत्ता महानगर की नींव डाली।

कलकत्ता नगर के निर्माण के तीन सौ वर्ष पूरे हुए इस लिए २४ अगस्त को नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने सेंट जॉर्ज चर्च के अहाते में जॉब चार्नाक की समाधि के पास एक सभा आयोजित की थी। नगर के वैभव का वर्णन करनेवाले प्रार्थना-गीतों के साथ सभा का शुभारंभ हुआ। इसके बाद जॉब चार्नाक की समाधि की चारों तरफ कुछ पौधे रोपे गये। इसके बाद सभा में कई व्यक्तियों के भाषण हुए। वक्ताओं ने कलकत्ता में पैदा हुए महान व्यक्तियों का

गुणगान किया, तथा इस नगर को केन्द्र बना कर अपने कार्यक्रम संपन्न करनेवाले महान् राष्ट्रीय नेताओं के बारे में अपने विचार प्रकट किये ।

## दीर्घायु का रहस्य

२३ अगस्त को ग्रेट ब्रिटन के एक गाँव में एक वृद्ध व्यक्ति ने अपनी ११२ वीं वर्ष-गाँठ शानदार ढंग से मनायी । समाचार-पत्रों ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा कि यही विश्व का सब से अधिक आयुवाला वृद्ध है । हो सकता है कि इनके समान आयु के अथवा उससेभी अधिक आयुवाले वृद्ध संसार में अन्यत्र हों । लेकिन उनके बारे में अधिक जानकारी हमें उपलब्ध नहीं है ।

साठ साल की आयु तक एक खदान में काम करनेवाले ११२ साल की उम्रवाले इस वृद्ध का नाम है जॉन इवान्स ।

कुछ शुभ-चिंतकों ने उनसें पूछा– "आपकी इस दीर्घायु का रहस्य क्या है?"

जॉन इवान्स ने तत्काल उत्तर दिया–"मैं न शराब पीता हूँ, न धूम्रपान करता हूँ! मैं कभी किसी पर नाराज़ नहीं होता । जुए का मैंने कभी नाम तक नहीं लिया!"

उनके निकटवर्ती मित्र बताते हैं कि उन्होंने जॉन इवान्स को न कभी मद्य-पान करते देखा, न धूम्र-पान करते! नाराज तो वे किसी पर होते ही नहीं । इसका मतलब यह है कि वे जो कहते हैं, उसके अनुसार आचरण करते हैं । ये ही उनके गुण उनकी दीर्घायु के रहस्य हैं ।

## आठ टन वज़न का ग्रंथ

फ्रान्स के टुलाऊस नगरी की एक प्रदर्शिनी में हाल ही में एक ग्रंथ प्रदर्शित किया गया, जो चार मीटर लंबा, तीन मीटर चौड़ा और आठ टन वज़न का है ।

एक स्थानिक प्रकाशन-संस्था ने अपने १५० वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर इसे प्रकाशित किया । उद्योग, व्यापार, वाणिज्य, प्रकाशन, कला इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में जिन प्रमुख व्यक्तियों ने सुयश प्राप्त किया, उनके विवरण इस ग्रंथ के तीस पृष्ठों में अंकित हैं । इस ग्रंथ के एक एक पृष्ठ का वज़न २०० किलोग्राम है!

# घंटियोंवाला भूत

गिरिपुर गाँव में केशवदास नाम का एक चूड़ीहारा रहता था। चूड़ियाँ एक ठेले पर सजाकर गाँव की गलियों में ठेला ठेलने हुए वह चिल्लाता, "चूड़ीवाला, माई री ऽऽ! चूड़ीवाला ऽ ऽ!" और ठेले से बँधी घंटी बजा देता। घंटी की ध्वनि सुनने में बड़ी मधुर होती थी। उसे सुनते ही लड़कियाँ और सुहागन औरतें घर से बाहर निकल कर रास्ते पर आतीं और नये नये किस्म की चूड़ियाँ आँखें भर कर देख लेतीं। केशवदास सब से बड़ी मीठी बातें करता। किसी ग्राहक को खाली हाथ न लौटाता। अपने फायदे की अपेक्षा ग्राहकों के संतोष को वह अधिक महत्त्व देता था।

एक दिन केशव का व्यापार खूब जमा। चूड़ियाँ बेचते-बेचते वह खूब दूर तक निकल गया। आखिर दिन ढलते ही वह घर की ओर चल पड़ा। सड़क के किनारे इमली का एक बड़ा सा पेड़ था। उसी दिन एक भूत ने आकर उस पेड़ पर अपना अड्डा जमा लिया था। वह एक नटखट भूत था। वह सोच ही रहा था कि आज किसको सताया जाय! तभी घंटी बजाते, ठेला ठेलते आनेवाला केशव उसे दिखाई दिया।

उस भूत ने अब तक कभी घंटा देखा नहीं था। इस घंटे की आकृति व उसमें से निकलनेवाली ध्वनि उसे कुछ अजीब सी लगी। उसके मन में आया ऐसी कुछ घंटाएँ अपने पास अवश्य होनी चाहिए।

फिर क्या था! हवा में तैरता हुआ वह भूत केशव के पास पहुँचा और ठेले से वह घंटी छीनकर गायब हो गया। भूत को देख केशव भय से काँप उठा और दौड़ादौड़ा गाँव की चौपाल पर पहुँचा। वहाँ इकठ्ठा लोगों को उसने अपने साथ घटित किस्सा सुनाया।

मगर उन लोगों में से किसी ने भी केशव

साधना शोम

की बात का विश्वास नहीं किया । वे लोग इस विचार से हँस पड़े कि किसी नटखट लड़के ने झुटपुटे अँधेरे में यह शैतानी की होगी । दरअसल उनमें से किसी ने भी आजतक कोई भूत देखा नहीं था ।

इसके बाद दूसरे दिन से क्रमशः 'बुढ्ढी के बाल' बेचनेवाले चरणदास के ठेले की घंटी, तथा बच्चों को पढानेवाले अध्यापक परमानन्द के औसारे पर टाँगा घंटा और इसी प्रकार कई मकानों में से घंटे गायब होते गये ।

गाँववालों को अब जाकर केशवदास की बातों में कुछ कुछ सचाई प्रतीत होने लगी । लेकिन आठ-दस दिनों में ही यह बात बिलकुल सच साबित हुई । बात यों हुई कि भूत ने जो जो घंटियाँ चुरायी, उन सब को अपने गले में पहनकर रात के वक्त हवा में तैरते वह शैतानी करने लगा । इससे घंटियों की जो आवाज़ें होती, उसे सुनते उसका मन भरता था । मगर इस से गाँववालों की नीन्द हराम हो गयी । रातों में वह भूत घंटियों को निनादित करते अपना मनोरंजन कर लेता और दिन में इमली के पेड़ पर आराम से सोया रहता ।

गावँ के लोगों की समझ में नहीं आ रहा था, कि घंटियोंवाले भूत से पिण्ड कैसे छुड़ाया जाय! इसी बीच ओझा वेंकटेश ने चौपाल में आकर डींग हाँकना शुरू किया—यदि उसे मौक़ा दिया जाय, तो वह भूत को गाँव की सीमा के बाहर भगा देगा । एक दिन संध्या-समय वेंकटेश नीबू तथा नीम की टहनियाँ लेकर गाँव के बीच पहुँचा । नीबू काटकर उन्हें हवा में उछालते और नीम की टहनियाँ घुमाते वह हाँ-हूँ करते मन्त्र-पाठ करने लगा । उसके मन्त्र सुनकर भूत तो आ पहुँचा, लेकिन वह ओझा वेंकटेश के गले में लटकने वाली चाँदी की छोटीसी घंटी खींच लेकर भाग गया ।

यह देख वेंकटेश अपनी छाती पीटने लगा । भूत के नटखटपन से लोग बहुत ही परेशान थे । वेंकटेश के गुरु मनीराम ने भी कहा, कि ऐसा नटखट भूत उन्हों ने अपनी ज़िंदगी भर में कभी देखा तक नहीं था । वह समझ चुका कि, उसके मन्त्र मानव-समाज की हानि करनेवाले भूतों पर ही कारगर हो सकते हैं, ऐसे नटखट भूतों पर नहीं! इसलिये वह अपने घर चला गया ।

ऐसी स्थिति में शहर में पढ़नेवाला वसन्त नाम का एक युवक उस गाँव के अपने रिश्तेदार के यहाँ कुछ दिन हँसी-खुशी में बिताने के लिये आ गया। उसे मालूम पड़ा कि घंटियोंवाला भूत गाँव के लोगों की नीन्द हराम कर बैठा है। वसन्त न केवल साहसी ही था, मगर बड़ा मेधावी भी था। अपनी बुध्दि के बल पर किसी उपाय से उस भूत को गाँव से भगाने की ठानी वसन्त ने।

एक दिन रात को एक भारी घंटा हाथ में लिये वसंत गाँव की गलियों में चक्कर काटने लगा। थोड़ी ही देर में उसकी कल्पना के अनुसार घंटियोंवाला भूत घंटियाँ बजाता हुआ उसके सामने उतरा। उसे देख वसन्त ज़रा भी विचलित हुए बिना वहीं खड़ा रह गया। भूत अपनी विशाल आँखों को गरगर घुमाते हुए अपना मुँह खोलकर उसके सामने आग उगलने लगा। उसका ख़याल था कि इससे घबराकर घंटा वहीं पटककर वसन्त वहाँ से भाग जाएगा।

मगर मन्द मुस्कुराते हुए वसन्त कहने लगा, "अरे, थोड़ी और देर ऐसे ही आग उगलते रहो न! जाड़े का मौसम है न; कौड़ी भी खर्च किये बिना आग तापने का मौक़ा मिल रहा है मुझे!"

वसन्त की बातें सुनकर भूत विस्मय में आ गया! शोले फूँकना बन्द कर वह बोला, "मैंने तो सोचा था कि, गाँव के अन्य लोगों की भाँति मुझे देखते ही घंटा यहीं फेंककर तुम भाग जाओगे। अच्छी बात है, तुम्हारे साहस पर मैं खुश हूँ। तुम्हारा यह घण्टा बहुत बढ़िया है। इसे मुझे देकर तुम लौट जाओ।"

वसन्त ने पूछा, ''घंटा लेकर क्या करोगे? इसे तुम बजा तो नहीं सकते ।''

''क्या कहा? घंटा बजाना मुझसे नहीं बन पड़ेगा? देखो तो सही, मेरे गले में कितनी घंटियाँ लटक रही हैं । इन्हें मैं इस प्रकार बजाऊँगा कि तुम्हारे कानों के पर्दे फटकर बहरे बन जाओगे तुम!'' कहकर भूत ने घंटे बजाना शुरू किया ।

उस कर्कश आवाज से भी वसन्त बिलकुल नहीं घबराया, बल्कि उसने भूत से पूछा, ''मैं एक शर्त पर यह घण्टा तुम को दे दूँगा । शर्त यही कि, तुम अगर यह घण्टा बजा न पाओगे तो तुम्हें यह गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा । मंजूर है यह शर्त?''

''क्यों नहीं? यह भी कोई बड़ा दाँव है?'' कहते हुए भूत ने अपना हाथ फैलाया ।

वसन्त ने घंटा भूत के हाथ दे दिया । उसे बजाने के इरादे से भूत ने घंटा जोर से हिलाया मगर उसमें से एक आवाज़ न निकली ।

इस पर घण्टे के अंदर देख कर भूत बोला—''यह तो सरासर धोखा धड़ी है । इस घंटे के भीतर सींका है ही नहीं, यह बजेगा कैसे? तुम दिखाओ तो बजाकर; शर्त के अनुसार मैं इस गाँव को छोड़ कर कहीं चला जाऊँगा । इस में से आवाज़ निकलने पर!''

वसन्त ने घंटे को अपने हाथ में लेकर हिलाया और खण् खण् ध्वनि से घण्टा बजने लगा!

आवाज़ सुनकर भूत ने घबराते हुए कहा, ''तुम तो बड़े मान्त्रिक मालूम होते हो । दाँव तुम ने जीता है । अपने वचन के मुताबिक मैं अभी यह गाँव छोड़कर चला जाता हूँ ।'' और भूत हवा में उड़ता हुआ, गाँव छोड़ कर तेज़ी से कहीं दूर चला गया ।

अब वसन्त मुस्कुरा उठा । सब की आँख बचाकर अपने कुर्ते की बाँह के भीतर कुहनी से बंधी एक घंटी को उसने खोल दिया । बड़े घंटे को हाथ में लेकर हाथ हिलाते वक्त यही घंटी बज उठी थी । लेकिन भूत इस बात को समझ नहीं पाया था ।

# डाकू युवराज

## (२)

(सुमेध राज्य की राजधानी शान्तिपुर समृद्ध नगर है । राजपरिवार के एक निकट रिश्तेदार व सेनापति वीरसिंह ने उस समय समस्त राजपरिवार समाप्त करने का षड्यन्त्र रचा, जब सारी जनता शिशु युवराज के जन्मदिन के उत्सव के कार्यक्रमों में निमग्न होगी । यह समाचार मिलते ही राजाने अपने दो वर्षीय बेटे व रानी को गुप्त सुरंग मार्ग से बाहर भेज दिया । आगे पढ़िये—)

"दरवाज़ा खोल दो ।" कठोर स्वर सुनाई दिया । राजा शान्तिदेव कुछ देर मौन ही रहे । पुनः दरवाज़े पर जोर जोर से दस्तक पड़ी और साथ ही राजा को आवाज़ सुनायी दी, "दरवाज़ा खोल दो ।" उन्हों ने खिड़की के गुप्त द्वार से बाहर देखा । बाहर राजा को अपरिचित दस सिपाही खड़े दिखायी दिये । वीरसिंह ने शायद उन्हें पड़ोस राज्य से बुलवाया होगा । वे भयकारी रूप में उछल रहे थे । उनको जो आदेश दिया गया था, उसे पूरा करने की तीव्र इच्छा उनके मन में थी । इस लिए वे दरवाज़े पर बार-बार दस्तक दे रहे थे ।

बार-बार चिल्लाने पर भी दरवाज़ा न खुलने के कारण सिपाहियों की सहनशीलता काफूर होती गयी । वे दरवाज़ा तोड़ने के विचार से भारी लक्कड लाकर उससे धक्का देने का प्रयत्न करने लगे । राजा ने जान

लिया की शहतीर के धक्के से दरवाज़ा ज़रूर टूट जायेगा । शहतीर को कंधेपर ढोकर उससे एक ज़ोरदार धक्का देने के ख़याल से सिपाही दस फुट पीछे हटे; और फिर खूब तेज़ी से आगे की ओर दौड़ पड़े । इसी ऐन मौके पर राजा ने झट से दरवाज़ा खोल दिया । बस, उस भारी भक्कम शहतीर के साथ सिपाही भी धम्म से आगे की ओर गिर पड़े! सिपाहियों को बड़ा आश्चर्य लगा कि अचानक यह क्या हुआ! राजा के पास कहीं कोई मंत्र-शक्ति तो नहीं है? वरना बंद दरवाज़े पर प्रहार करते ही सभी यों कैसे गिर पड़े? दूसरे ही क्षण अपनी तलवार तान कर राजा बिजली की भाँति उन पर टूट पड़े । सिपाही यह सब क्या हो रहा है—इसकी वास्तविकता समझ नहीं पाये, तब तक राजाने दो सिपाहियों के सर काट डाले ।

"अरे, बचकर भाग गये । भाग गये!" बाकी सिपाही चिल्ला उठे ।

"उसको पकड़ लो । किसी भी उपाय से पकड़ो उसको, वरना तुम्हारे सिर कट जायेंगे मेरे हाथों! खबरदार!" दूर से एक आवाज़ ने उन्हें आदेश दिया । राजाने बीरसिंह की वह आवाज़ पहचान ली ।

उधर राजमहल के बाहर आतिषबाजी का कार्यक्रम उत्साह से चल रहा था! कृत्रिम, वृक्षाकृति वाले विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगी शोले आसमान में 'धडाड़ धुम' आवाज़ के साथ फूट रहे थे । राजधानी के सारे लोग वह अभूतपूर्व तमाशा देख रहे थे । सब में पूरा उत्साह उमड़ पड़ा था । इस विशाल मैदान पर ऐसा जनता-सागर पहले कभी नहीं जमा हुआ था । युवराज के जन्म-दिन के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में बालक जवान और बूढ़े सब को एक-सी रुचि थी । राजमहल के अन्दर जो लड़ाई छिड़ रही थी, उससे सारी प्रजा बेख़बर थी ।

रानी के महल में अनेक कमरे व दालान थे । मगर उनके सारे दरवाज़े बन्द थे । राजा अथवा रानी कहीं उन द्वारों में से बाहर निकले तो तत्काल उनका संहार करने के लिये सारे दरवाज़ों पर हाथ में नंगी तलवारें लिये सिपाही तैनात थे । सभी बंदोबस्त यों पक्का था कि राजा, रानी और युवराज राजमहल से बाहर जाने की कोशिश करते तो पकड़े जाते ।

बाहर निकलते ही राजा सामने स्थित

सीढ़ियों की ओर दौड़ पड़े । वहाँ पहरा देनेवाले सिपाही ने उन पर प्रहार करने के लिये तलवार उठायी । मगर उसका वह वार खाली रहा, क्यों कि राजा ने सिर झुका कर एक ही छलाँग में सिपाही को ही नीचे गिरा दिया और खुद द्रुत गति से सीढ़ियाँ चढ़ने लगे । सीढ़ियों के छोर पर स्थित दरवाज़ा बन्द था । राजा उसकी अलगनी खोलने लगे, इतने में कहीं से दो सिपाही उनकी ओर दौड़ आये । राजा ने एक ही प्रहार में दोनों को सीढ़ियों पर से नीचे ढकेल दिया । वे दोनों दर्दभरी आवाज़ में चिल्लाते हुए सीढ़ियों से नीचे तक लुढ़कते गये । राजा किवाड़ खोलकर छतपर जा पहुँचे ।

राजमहल के बाहर जनता उमंग में आकर आतिषबाजी देख रही थी । तालियाँ बजा कर कोलाहल मचा रही थी । शान्तिपुर की भोली भाली प्रजा अपने युवराज की जन्मगाँठ उत्साह से मना रही थी । बेचारे वे लोग यह भी नहीं जानते थे कि उनका वह लाड़ला युवराज और राज-दम्पति अन्दर मृत्यु के साथ कैसे संघर्ष कर रहे थे । उन के प्रति श्रद्धा व भक्ति रखने वाली प्रजा व राजा के बीच इस समय केवल चन्द गजों की दूरी थी; फिर भी उन तक पहुँचने का रास्ता राजा को दिखाई नहीं दे रहा था ।

सीढ़ियाँ चढ़कर किसी के ऊपर आने की आहट सुनकर दरवाज़े के पास खड़े राजा ने चेतावनी दी – "यदि किसी ने मुझे पकड़ने की कोशिश की, तो उसकी खैर नहीं; खबरदार! एक पैर आगे बढ़ाओगे तो मौत को निमंत्रण दोगे! मुझसे भिडने की बेकार कोशिश मत करना ।"
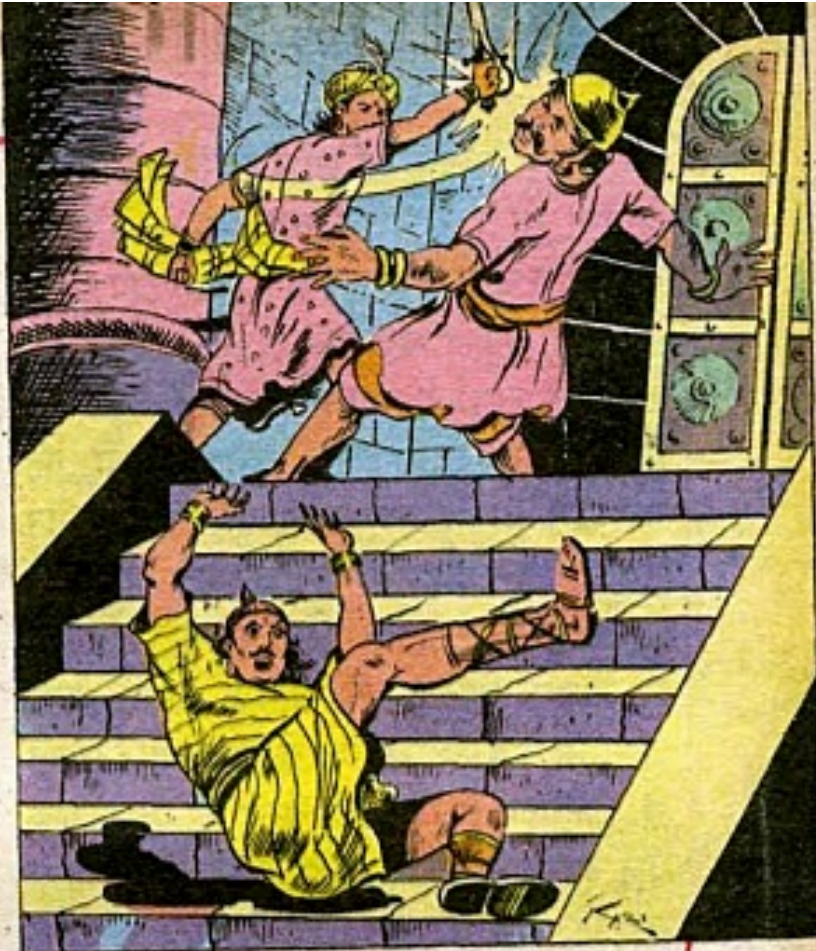
"उसको मार डालो! बक्साभर सोना पुरस्कार में प्राप्त करो । ऐसा अवसर फिर कभी प्राप्त नहीं होगा । जनम भर मालामाल होना हो, तो आज अपने सारे शौर्य को दिखा देने की कोशिश करो । ऐसा महा-पुरस्कार फिर कभी मिलनेवाला नहीं ।" सीढ़ियों के नीचे खड़े होकर कोई सिपाहियों में उत्साह भर रहा था । लालच मनुष्य के द्वारा नीच से नीच कार्य भी करवा सकता है । वह मनुष्य को हैवान बना सकता है । वह मानव से चाहे जो घृणित पाप करवा सकता है ।

"सोना! सोना!" चिल्लाते दो सिपाही परस्पर होड़ करते, राजा की दिशा में सीढ़ियाँ

चढ़ने लगे । सोने के लोभ ने उनको पागल बनाया था । राजा के सर्वनाश का विचार करते हुए उन्हें ज़रा लज्जा नहीं हो रही थी ।

"लो, बक्सा भर सोना ले लो!" कहते हुए राजा ने उनपर अपनी तलवार से प्रहार किया । दूसरे ही क्षण उनके हाथों की तलवारों दूर जा गिरी । और वे 'हाय माँ, मर गये ।' चिल्लाते हुए नीचे लुढ़कते गये ।

अब राजा सुरक्षित स्थान पर थे । सीढ़ियों से होकर जितने भी सैनिक आये, बड़ी आसानी से वे उनको मौत के घाट उतार सकते थे । लेकिन वीरसिंह के सैन्य का दूसरा एक दल अलग दिशा में लंबी निसेनी की मदद से छतपर जाने की कोशिश में था । राजा ने पहले ही इस बात का भी विचार किया था । एक ओर सीढ़ियों से चढ़कर आनेवाले सैनिकों का सामना करते हुए सतर्कता से इस ओर भी निगाह रखे हुए थे वे! अचानक राजा ने देखा, कि छत पर एक सैनिक एक लम्बा भाला लिये उनकी ओर निशाना साधकर बढ़ा चला आ रहा है । राजा झट झुक गये, एक छलाँग लगाकर आगे कूद पड़े और उन्होंने सैनिक पर लात मारी । सैनिक चीखकर फर्श पर गिर पड़ा । राजा ने तुरन्त झुक कर नीचे की ओर देखा - कुछ और सैनिक चढ़कर ऊपर आ रहे हैं । इस पर राजा ने सीढ़ी को भी गिराने के ख्याल से उस पर जोर से ठोकर मार दी ।

मगर इसी बीच कुछ और सैनिक सोपान से होकर छतपर आ गये और कुछ ऊपर आ रहे थे । राजा ने जान लिया कि अब इस रीति से लड़ना उनके लिये लाभदायक नहीं है और

हालत बड़ी ख़तरनाक बनती जा रही है। वीरसिंह कम से कम सौ सैनिकों को अपने साथ लाया होगा। थोडी ही देर में वे सब उसको घेर सकते हैं, अकेले वे कितने लोगों को मार सकते हैं! अब मृत्यु का उन्हें डर नहीं था। उन्हें इस बात का आत्मसंतोष था कि अपने पुत्र व रानी को सुरंग मार्ग से उन्होंने किसी अज्ञात जगह भेज दिया था। पहले से ही ज्ञात मृत्यु की अपेक्षा शायद अज्ञात की स्थिति बेहतर हो!

अब शत्रु के सैनिक राजा के समीप आ गये थे। राजा के सिर के ऊपर आसमान में आतिषबाजी का एक शोला फूट पड़ा। विद्युत् जैसी उस रोशनी में एक सैनिक के पीछे खड़े वीरसिंह का चेहरा राजा को दिखाई दिया। वही वह राजा का कृतघ्न सेवक था जो राजा के अभी उपकारों को भूल गया था। अपने षड्यंत्र को पूर्णत: सफल करने का उसने बीड़ा उठाया था। अकेले राजा पर सौ-सौ सैनिकों को छोड़ते उसे ज़रा भी शर्म नहीं होती थी। मानव का मन एक अद्‌भुत वस्तु है, जिसमें कमल के फूलों के साथ रक्त की प्यासी जौंकें भी पैदा होती हैं।

"विश्वासघातकी, पापी, हरामजादे! अपनी जान बचा लो।" कहते हुए राजाने अपने कमरबन्द में लड़कनेवाला छुरा निकालकर उसपर फेंक मारा। मगर वीरसिंह हट गया और उसकी जान बची रही। उसका बायाँ कान थोड़ा सा कट गया। वीरसिंह कान में हाथ लगाये ज़रा बैठ गया। कान से ख़ून की धारा बह निकली। फिर भी अपनी शरीरिक वेदना को भूल कर

अपने इष्ट कार्य को संपादन करने के लिए वह तेज़ी से उठ खड़ा हुआ ।

"अरे, मार डालो उसको!" गरजता हुआ वीरसिंह असहनीय क्रोध में चिल्ला उठा! सिपाही भी उत्साह में आकर राजा के समीप जाने लगे; मगर इसके पूर्व ही उन सैनिकों द्वारा ऊपर आने के लिये लगायी गयी एक सीढ़ी से राजा नीचे उतरने लगे थे ।

"सीढ़ी को नीचे गिरा दो, जल्दी गिरा दो ।" वीरसिंह ने आज्ञा दी । उस समय वीरसिंह के कुछ सैनिक उसी सीढ़ी से ऊपर आ रहे थे । छतपर स्थित सैनिकों ने सीढ़ी नीचे गिरा दी, तब तक राजा आधी सीढ़ी पार कर चुके थे, इसलिये वे बड़ी आसानी से नीचे कूद पड़े और सीढ़ी को उठाकर उन्होंने पार्श्व में स्थित ऊँची चहारदीवारी से सटकर लगा दिया ।

"सीढ़ी को नीचे खींच लो, खींच लो ।" छत पर खड़ा वीरसिंह चिल्लाने लगा; मगर तब तक उसके सारे सैनिक उसी छत पर पहुँच चुके थे । राजा को किसी प्रकार बन्दी बनाकर बक्से भर सोना प्राप्त करने और वीरसिंह की कृपा प्राप्त करने के ख़याल से सभी के सभी सैनिक अपनी अपनी जगह छोड़ कर ऊपर चले गये थे । राजा के नीचे उतरते समय जो सैनिक ऊपर चढ़ रहे थे वे सीढ़ी नीचे गिरा देने से गिर कर घायल हो चुके थे । फिर भी लंगड़ाते हुए वे सीढ़ी तक पहुँचे । मगर तब तक राजा चहारदीवारी के तट पर पहुँच चुके थे । वे सैनिक सीढ़ी गिराने की कोशिश कर ही रहे थे ।

"अरे मूर्खों! अब सीढ़ी को क्यों खींच रहे हो? दीवार पर चढ़कर उसको मार डालो ।" वीरसिंह गरज उठा ।

चहारदीवारी से सटकर सुमति नदी बह रही थी । दीवार पर खड़े राजा अब आगे के कर्तव्य के बारे में सोच रहे थे । कान कटने से बह रहे खून की परवाह किये बग़ैर वीरसिंह खुद जल्दी से नीचे उतर पड़ा । राजा अब बच गये तो अपने जान की खैर नहीं—इस विचार से उसने "ऊपर चढ़ जाओ, चढ़ो जल्दी और उसका बध करो किसी तरह" कहकर उसने अपने सैनिकों को उकसाया और खुद ऊपर खड़े राजा की ओर अपने भाले का निशाना किया । भाले से ठीक-ठीक

निशाना साधने की उसकी कुशलता पर प्रसन्न होकर राजा ने एक बार उसका विशेष सम्मान किया था ।

वीरसिंह ने राजा पर भाला फेंका । चाँदनी में चमकते आसमान में सर्र से आगे निकलता हुआ भाला सब ने देखा मगर वह राजा पर लगा कि नहीं यह किसी ने भी नहीं देखा । लेकिन राजा तो दीवार पर से अदृश्य थे ।

शीघ्र गति से सीढ़ी चढ़कर वीरसिंह ने दीवार पर से नीचे देखा । भाला लगने से राजा नदी में गिर पड़े, या तो निशाने से बचने के लिये खुद ही नदी में कूद पड़े होंगे । मगर यह जान कैसे ले, कि क्या हुआ है! राजा मर गये हैं कि बच निकले हैं?

चारों तरफ़ घिरे सैनिकों से वीरसिंह ने पूछा, "क्या तुम में से किसीने राजा को भाला लगते हुए स्पष्ट रूप से देखा है?"

सारे सैनिक तो उदास दीख रहे थे, क्यों कि अब बक्से भर सोना किसी के नसीब न था ।

"महाराज, आप ने भाला फेंका था, उसका निशाना कैसे चूक सकता है? आप के भाले ने ही अचूक अपना काम किया होगा ज़रूर! तभी तो राजा नदी में गिर पड़े । भाला चलाने की आप की कुशलता तो सभी जानते ही हैं ।" एक सैनिक ने वीरसिंह की खुशामद करते हुए कहा ।

"चुप रहो! मेरा भाला लगने से नदी में गिरते हुए राजा को देखा है तुम ने अपनी आँखों से? देखा हो तो साफ़ कह दो, नहीं तो मुँह बन्द रखो । बेकार की बकवास नहीं चाहिये मुझे ।" गुस्से से वीरसिंह ने कहा ।

उसका गर्जन सुनकर सभी सैनिक मौन हो गये । तेज़ गति से बहनेवाली नदी की ओर वीरसिंह देखता रह गया । कलकल ध्वनि के साथ बहनेवाली नदी क्या उस को देख खिलखिला कर हँस रही है?

वीरसिंह यही जानना चाहता था । अगर राजा मर गये हैं, तो उसका षड्-यंत्र सफल हो गया! अगर राजा नदी में कूद पड़े हों, तो वे जिंदा है । तब तो वह हार गया । आगे जाने क्या होगा! तब तो षड्-यंत्र का दूसरा अध्याय शुरू होगा ।

# शूरसेन की कहानी

दृढ़व्रती विक्रमार्क वृक्ष के पास लौट आये, शाखा से लटका शव उतारा और उसे अपने कंधेपर डाल कर हमेशा की भाँति चुपचाप स्मशान का रास्ता नापने लगे । शव में वास करनेवाला बेताल बीच रास्ते बोल उठा, "राजन्, अर्धरात्रि के समय इस भयावह माहौल में आप जो कष्ट उठा रहे हैं वैसे और कोई नहीं उठा सकेगा, और वह भी दूसरों के लिये! फिर मेरे मन में तो यह भी प्रश्न उठ रहा है, कि आप को इस कार्य के लिये प्रवृत्त करनेवाले लोग, कार्य के पूर्ण होने पर उचित रूप में आप का आदर करेंगे भी या नहीं! इस संदर्भ में आप को यह जान लेना उचित होगा, कि शूरसेन नामक राजाने, जो एक समृद्ध देश के अधिपति तथा महान् पंडित भी हैं, अपनी मदद करनेवाले व्यक्ति के प्रति कैसा अनुचित एवम् अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है । यह कहानी सुनते हुए आप को अपने कष्टों का एहसास नहीं

## बेताल कथा

रहेगा । सुन लीजिए ।" –

बेताल कहानी सुनाने लगा ।

प्राचीन काल में गान्धार देश पर राजा शूरसेन का शासन था । वे न केवल कुशल शासक थे, बल्कि उच्च कोटि के विद्वान भी थे । कलाओं को वे खूब प्रोत्साहन दिया करते थे । चित्रकला व नृत्य के प्रति उनके मन में अपार अभिरुचि थी । उनके दरबार में कवि व चित्रकारों के साथ नर्तक भी थे । लेकिन उनकी कला से वे काफ़ी संतुष्ट नहीं थे । वे हमेशा चाहते थे कि अधिक ऊँचे दर्ज़े के कलाकार उनके दरबार में नित्य संमिलित करते रहे । इस लिए अच्छे अच्छे कलाकारों को वे निमंत्रित भी किया करते । कलाकारों का सन्मान करने में उनको नित्य विशेष संतोष प्राप्त होता ।

एक दिन दरबार में राजभटों ने एक ऐसी युवती को प्रस्तुत किया, जिसके वस्त्र जीर्ण-शीर्ण थे, केश बिखरे हुए थे और जो दीनावस्था में थी । राजभट बोला, "महाराज यह युवती स्वर्णमुखी नदी में बहकर आयी है । हम ने इसकी सुश्रूषा कर इसे सावधान किया और उसके परिवारवालों के बारे में पूछा । लेकिन हमारे किसी प्रश्न का जवाब दिये बगैर वह बराबर रोयी जा रही है । बेचारी बहुत दुखी नज़र आ रही है । एक-दो दिन बाद सम्हल जाने पर शायद अपना परिचय दे सके ।"

उस युवती को ठीक से देखने पर राजा भी विस्मय में आ गये । दीनावस्था में भी कीचड़ के कमल की भाँति उसका सौंदर्य निखर रहा था । किस कारण उसकी यह अवस्था हो गई है, इस संबंध में राजा के मन में कई तर्क पैदा हुए । राजा ने उचित समझा कि उसी के मुँह से उसका परिचय पा लें ।

उसकी ओर दयापूर्ण दृष्टि से देखते हुए राजा ने पूछा, "बेटी, कौन हो तुम? तुम्हारा परिचय दो । नदी में कैसे गिर गयी तुम? किसी ने तुम पर अत्याचार किया या किसी विशेष परिस्थिति में तुम ने आत्महत्या का प्रयत्न किया? तुम साफ़ साफ़ बताओ तो हम तुम्हारी यथासंभव सहायता करेंगे ।"

राजा के प्रश्न सुनकर युवती ने अपने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप लिया और वह बिलख उठी ।

पलभर सोचकर राजा शूरसेन ने भटों से

कहा, "ठीक है । फिलहाल इस युवती को महारानी के पास पहुँचा दो ।"

शाम को राजा महारानी लीलावती से मिलने गये । उन्हों ने पूछा, "देवी, आज सुबह जिस स्त्री को मैं ने तुम्हारे पास भेजा था, वह क्या अब कुछ स्वस्थ हो गयी है? उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल कर सकी तुम?"

"नहीं प्रभु! मैं ने अपनी ओर से खूब कोशिश की, मगर मैं इतना ही जान पायी, कि उसका नाम 'मल्लिका' है । उसने मुझ से यही निवेदन किया कि फिलहाल उसके सम्बन्ध में अधिक जानने का प्रयत्न न करें । मगर इसके पूर्व मुझे यह समाचार प्राप्त हुआ है—कि वह एक साधारण युवती नहीं, बल्कि एक बहुमुखी प्रज्ञाशालिनी, तथा असाधारण कलावती है ।" इतना कहकर महारानी ने अपनी सखी को संकेत किया ।

सखी ने तत्काल एक चित्र लाकर महाराजा के हाथ में दिया । राजा शूरसेन चित्र देखकर एकदम चकित रह गये । वह चित्र साक्षात् मल्लिका का ही था । प्रातः काल सभा-भवन में वह जिस दशा में उपस्थित थी, हूबहू उसी रूप में वह चित्र अंकित था ।

आश्चर्य में आकर राजा ने पूछा, "यह चित्रकला तो अपूर्व है, अद्भुत है! किसने इसे चित्रित किया?"

रानी लीलावती ने जवाब में कहा, "चित्र में चित्रित युवती ही खुद चित्रकार है उसकी ।

मैंने आप से कहा था न कि यह कोई साधारण नहीं है । कितने थोड़े समय में उसने अपना यह चित्र बनाया है! उसकी कला देख मैं दंग रह गई, महाराज!"

"क्या? मल्लिका ने स्वयं इसे चित्रित किया है?" राजा ने पुनः पूछा ।

"हाँ हाँ! उसने स्वयं कहा है कि चित्रकला के साथ वह नृत्यकला भी जानती है । उसने यह भी कहा कि उसकी परीक्षा लेकर आप संतुष्ट हुए, तो वह हमारे दरबार में स्थान पाना चाहती है । उसने कहा है कि आप के आने के बाद वह अपने नृत्य का प्रदर्शन करेगी ।" लीलावती ने कहा ।

"तब तो अभी मैं देखना चाहता हूँ कि वह नृत्यकला में कितनी माहिर है । हमारे

दरबार में एक सुयोघ्य राजनर्तकी का स्थान कब से रिक्त पड़ा है! अगर यह नृत्यकलाप्रवीण है तो हमारी समस्या सुलझ गयी!" राजा ने उत्सुकता दर्शायी ।

थोड़ी देर बाद लीलावती की सखी नर्तकी के वेष में मल्लिका को वहाँ ले आयी । सजी हुए मल्लिका को देख राजा शूरसेन एकदम मुग्ध हो उठे ।

लीलावती ने राजा से पूछा, "प्रभु, क्या नृत्य आरंभ करने का आदेश दे दूँ?"

शूरसेन ने स्वीकृति में सिर हिलाया और राजदंपति को प्रणाम करके मल्लिका ने तत्काल अपना नृत्य आरंभ किया ।

नृत्य की समाप्ति पर तालियाँ बजाकर शूरसेन ने कहा, "शाबाश मल्लिका! तुम मल्लिका नहीं, साक्षात् मयूर कन्या हो । मेरी कलातृष्णा को भाँपकर खुद नटराज शिवजी द्वारा भेजी गयी कलावती हो तुम । तुम्हारे आगमन से मेरे दरबार में एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो गयी है । आज से तुम हमारे दरबार की प्रमुख नर्तिका हो । आइंदा तुम केवल नृत्य ही की साधना करती रहो ।"

बड़ी प्रसन्नता से राजदम्पति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर मल्लिका वहाँ से चली गयी ।

इसके बाद राजा शूरसेन वहाँ से सीधे गुप्त मंत्रणा-गृह में चले गये और मन्त्री केशवभट्ट को बुला लाने का उन्होंने आदेश दिया ।

मन्त्री के आगमन पर राजा ने उसको मल्लिका के बारे में सारा वृत्तान्त सुनाया और उसको दरबारी नर्तकी के पद पर नियुक्त किये जाने का समाचार भी दिया ।

यह वृत्त सुनकर केशवभट्ट ने विकल होकर कहा । "प्रभु! आप ने यह क्या किया? सौन्दर्यवती तथा चतुर नारी को, उसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त किये बगैर? जनता में प्रमुख स्थान रखनेवाले पद पर उसे नियुक्त करना उचित नहीं है । अब भी समय है । आप उसको दरबार में केवल आश्रय मात्र प्रदान कीजिये, प्रमुख स्थान देने की बात अस्वीकार कीजिये ।"

" अब यह नहीं हो सकता । मैं ने उसको दरबारी नर्तकी का स्थान दे ही दिया है ।" शूरसेन ने कहा ।

इसपर केशव भट्ट राजा की ओर बड़े विस्मय से देखने लगे । "मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मल्लिका को मैंने वचन देने की जल्दबाज़ी की है । लेकिन पुनश्च विचार करने पर अपने वचन का पालन करना ही मुझे उचित लग रहा है । हो सकता है कि तुम्हारी शंका के अनुसार वह किसी देश की गुप्तचर भी हो, अब हम लोग अत्यन्त सावधान रहेंगे ।" राजा ने फिर कहा ।

राजा का यह तर्क भी केशवभट्ट को पसन्द नहीं आया, मगर उन्होंने मौन रहना ही ठीक समझा ।

इसके बाद दरबार में राजनर्तकी के पद पर मल्लिका को घोषित किया गया । उसके द्वारा चित्रित चित्रों से राजमहल अलंकृत हुआ । साधारण नागरिक से लेकर प्रमुख राजाधिकारी तक—सब लोग मल्लिका के सौन्दर्य व नृत्य की सराहना करने लगे । क्रमशः मल्लिका के आश्रय में आनेवाले लोगों की संख्या बढ़ने लगी ।

मल्लिका की चित्र व नृत्यकला के सब से अधिक प्रशंसक होकर भी शूरसेन एक राजा के रूप में अपने कर्तव्य से च्युत नहीं हुए । उन्हों ने मल्लिका की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिये गुप्तचरों को नियुक्त किया ।

लेकिन राजा की हालत ऐसे हुई, जैसे 'चिडियाँ चुग गयीं खेत!' शूरसेन को जब पता चला कि मल्लिका पड़ोस देश कलिंग की गुप्तचर है, तब उन्हों ने उसको अपने दरबार से हटा दिया । मगर तब तक कलिंग की सेनाओं ने गांधार देशपर हमला बोल दिया था । गांधार इस युद्ध के लिये सन्नद्ध न था; इसलिये राज्य कलिंग-राजा विकर्ण के अधीन हो गया ।

कतिपय सैनिकों ने मिलकर रानी लीलावती और उसकी सखियों को राजमहल के गुप्त सुरंग-मार्ग से ले जाकर उसके पिता चंपक देश के राजा के पास पहुँचा दिया ।

अपनी पराजित सेना से अलग होकर राजा शूरसेन अपने राज्य की सीमा पार वाले भील-राजा की मदद माँगने चल पड़े । रास्ते में सड़क के किनारे उन्हें एक ज्योतिषी दिखाई दिया । कई लोग उसे घेरे हुए थे । यूँ ही शूरसेन वहाँ पहुँचे और उन्होंने ज्योतिषी की ओर अपना हाथ बढ़ाया ।

गरीबी से व्यथित हो, लेकिन शीघ्र ही तुम्हें इन्द्रभोग प्राप्त होनेवाला है ।"

ज्योतिषी की बातों पर हँसते हुए राजा शूरसेन भील राजा के प्रदेश की ओर आगे बढ़े ।

कुछ दिन बाद ही शूरसेन के ससुर चंपक-नरेश ने कलिंग पर चढ़ाई कर दी और इधर शूरसेन ने भील-राजा की मदद से अपने देश पर कब्जा कर बैठे विकर्ण पर धावा बोल दिया और इस प्रकार दोनों राज्यों पर उसने अधिकार कर लिया ।

फिर एक बार राजा बने शूरसेनने मल्लिका को बुलवाकर कठोर स्वर में उससे पूछा, "मल्लिका, जानती हो न, कि अब कलिंग राज्य हमारे हाथों में आया हुआ है?"

स्वीकृति में मल्लिका ने सिर्फ़ सिर हिला दिया ।

"तब तो और एक बात भी जान लो । तुम राजा शूरसेन की दरबारी नर्तकी हो । केवल नर्तकी; समझी?" शूरसेन ने कहा ।

मल्लिका तो इस विचार से भयभीत थी, कि उसे अपने अपराध के लिये कड़ी सज़ा मिल जाएगी । पर अब सज़ा से मुक्त हो, वह शूरसेन को कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम करके वहाँ से चली गयी ।

इसके बाद शूरसेन ने ज्योतिषी को बुलवाकर आदेश दिया, "आज से तुम ज्योतिष नहीं बता सकते, तुम को हमारे राजभट के रूप में मैं नियुक्त कर रहा हूँ ।"

इसके बाद राजा ने अपने राज्य में यह

हथेली देखकर ज्योतिषी ने कहा, "ओह, इस हाथ में महाराजा का योग है । आप ने कोई ग़लती की है और अब पछता रहे हैं । लेकिन आप का यह दुर्भाग्य ही भाग्य में बदल जाएगा और सब प्रकार से आप का शुभ ही होगा ।"

उस क्षण तक राजा शूरसेन यह सोचकर व्याकुल थे कि उन्होंने अपनी ही भूल की वजह से राज्य खो दिया है । परन्तु ज्योतिषी की बातों से उनके मन में नया उत्साह और आत्मविश्वास जाग उठा!

राजा जब वहाँ से जाने को हुए तब एक किसान का हाथ देखकर ज्योतिषी बोला, "ओह, चक्रवर्ती राजाओं को भी मात करनेवाली हस्तरेखाएँ हैं ये! तुम अपनी

कानून बनाया, कि सारे देश में कोई भी व्यक्ति शुक-ज्योतिष, हस्त-सामुद्रिक जैसा पेशा नहीं कर सकता । ये दोनों केवल शास्त्र के रूप में सीखे जा सकते हैं ।"

यह कहानी सुनाकर बेताल ने कहा, "राजन्, क्या शूरसेन का व्यवहार न्याय-विरुद्ध नहीं है? उन्हें धोखा देनेवाली स्त्री को उन्हों ने फिर नर्तकी का पद प्रदान किया और उनमें नया उत्साह पैदा करनेवाले ज्योतिषी को उस के पेशे से वंचित किया । इस संदेह का समाधान जानकर भी न बताए, तो आप के मस्तक के टुकड़े टुकड़े होकर बिखर जायेंगे ।"

विक्रमार्क ने जवाब में कहा, "शूरसेन का व्यवहार न्याय-विरुद्ध बिलकुल नहीं है । ज्योतिषि ने किसान युवक का जो भविष्य बताया, उससे राजा समझ चुके कि वह ज्योतिष संबंधी ज्ञान बिलकुल नहीं रखता । ऐसे लोगों द्वारा दी गयी भविष्य वाणी जनता की मानसिक स्थिति को हानि पहुँचा सकती है । ऐसे ख़तरों को रोकने के लिये ही रास्ते के किनारे अड्डा जमाकर ज्योतिष कहने का राजा ने निषेध किया । मगर साथ ही वह कंगाल न बने, इस इरादे से ज्योतिषी को अपने दरबार में नौकरी भी दी ।"

"अब रही मल्लिका की बात । वैयक्तिक रूप में वह एक अपूर्व कलाभिज्ञ है । राजा खुद बड़े कलाप्रेमी हैं । जिस राजा ने मल्लिका को अपनी गुप्तचर के रूप में नियुक्त किया था, वह खुद तो अपना राज्य ही खो बैठा । इस का तात्पर्य है, कि अब वह किसी के हाथ की हथियार नहीं है; वह अब खुद खूब चमक सकती है, मगर किसी का सर काट नहीं सकती । यही कारण है, कि कलासक्त शूरसेन ने मल्लिका के कलाकौशल को अपने देश की निजी संपत्ति बनाकर दूरदर्शिता प्रकट की है ।"

यह कहकर राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर वृक्ष पर जा बैठा ।

(कल्पित)

# तोते की चुप्पी

किसी देश पर एक राजा शासन करते थे। न्याय-निर्णय में उनकी बराबरी करनेवाला कोई न था। एक बार वे किसी आरोपी के साथ न्याय कर रहे थे। उसी समय मानव की बोली बोलनेवाला एक दैवी तोता कहीं से उड़ कर वहाँ आ पहुँचा और राजा का न्याय-निर्णय समाप्त होते ही "शाबाश!" कह कर राजसभा से उड़ कर चला गया।

इसी राज्य में एक चतुर दग़ाबाज़ रहा करता था। छोटे-मोटे अपराध करके वह थक गया था। उसने सोचा—क्यों न दो-चार बड़ी-बड़ी चोरियाँ करके सारी ज़िंदगी आराम से बिता दूँ?

वह एक समुद्री व्यापारी के घर में नौकरी पर लग गया। ईमानदारी से काम करने का स्वाँग रच कर शीघ्र ही वह व्यापारी का विश्वासपात्र सेवक बन गया।

एक दिन उसने व्यापारी से कहा—"मालिक, हमारे बंदरगाह में सुगंध द्रव्यों से भरा एक जहाज़ कल आ रहा है। आप अगर कुछ धन दें, तो मैं सस्ते में माल खरीद लूँगा। इस से आपको काफ़ी लाभ मिल सकता है।"

व्यापारी ने उसकी बात टालते हुए हँस कर कहा—"अरे, इस व्यापार में कोई विशेष लाभ नहीं होता, मैं जानता हूँ।"

लेकिन दग़ाबाज़ ने कुछ होशियारी से व्यापारियों को पहले ही बंदरगाह पर भेज दिया। जहाज़ के पहुँचते ही वे व्यापारी विदेशी व्यापारियों से मिले और उन्होंने कहा— "अब की बार सुगंध द्रव्यों की माँग एकदम घट गई है!" सब के पीछे दग़ाबाज़ उनसे मिला और उसने कम दाम पर बहुत-सा माल खरीदा। अपने मालिक व्यापारी को उसने दिखा दिया कि अब कैसे

पाँचों घी मैं हैं!

यों कुछ दिन गुज़र गये। एक बार व्यापारी ने दग़ाबाज़ को बुलाकर कहा—"सुनो, आज रात को मोतियों का व्यापार करनेवालों का एक जहाज़ अपने बंदरगाह में लंगर डाल रहा है।" उसने एक भारी रकम दग़ाबाज़ के हाथ सौंप दी।

दगाबाज़ के दिल की मुराद पूरी हो गयी वह ऐसे ही मौके की ताक में था। धन के हाथ लगते ही वह वहाँ से भाग निकला।

अब दग़ाबाज़ एक दूसरे गाँव में पहुँचा। वहाँ एक धनी कवि के यहाँ उसने आश्रय प्राप्त कर लिया। बातचीत के दौरान में कवि के प्रति सहानुभूति जताते हुए उसने कहा—"आप तो एक महान् कवि है, फिर भी अपनी प्रतिभा के अनुरूप आप को सफलता नहीं प्राप्त हुई है। राज-दरबार में आप का यश फैलाने का एक अनोखा उपाय मेरे पास हे।"

कवि ने उत्कण्ठापूर्वक पूछा—"क्या है भला वह?"

दग़ाबाज़ ने उत्तर दिया—"अगर थोड़ा धन खर्च में आप हिचकिचाएँगे नहीं, तो एक शानदार साहित्यिक-गोष्ठि में आप का अभिनंदन करके समस्त राज्य भर में आप का यश मैं फैला सकता हूँ।"

कवि उसकी बातों में आ गया और उसे काफ़ी धन दिया। दग़ाबाज़ ने इस धन के साथ कुछ भोले-भाले लोगों से चन्दा वसूल किया और सारा धन लेकर वह राजधानी आ पहुँचा।

यहाँ वह एक धनी युवक के आश्रय में

गया। यह युवक राज-दरबार में बड़ा ओहदा प्राप्त करने के लिए लालायित था। उससे धन निकालने की उसने एक तरकीब सोची।

"यदि आप थोड़ा धन खर्च करने के लिए तैयार हैं, तो मैं राजदरबार में अपनी साख का प्रयोग कर सकता हूँ।" कहते हुए दग़ाबाज़ ने युवक से एक भारी रकम ले ली और भाग चला। पर हाय, बदकिस्मति से राजभटों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया।

राजा ने इन्साफ करके दग़ाबाज़ को कारागार की कड़ी सज़ा दी। सभी दरबारियों ने तालियाँ बजा कर राजा के निर्णय को पूर्ण स्वीकृति दी। पर उस समय दरबार में उपास्थित तोता मौन ही रह गया।

यह देख राजा ने कुछ समय अधिक गहराई से विचार किया। उसने शिकायत करनेवाले तीनों लोगों को हल्की सज़ा देने की घोषणा की। दूसरे ही क्षण तोता बोल उठा—"शाबाश"!

व्यापारी, कवि और धनी युवक एक साथ बोल उठे—"प्रभु, यह तो अन्याय है। धोखा तो दग़ाबाज़ ने दिया है, हम लोग तो धोखा खा गये हैं!"

राजा ने व्यापारी की ओर देखते हुए कहा—"तुम्हें मालूम था कि सुगंध द्रव्यों पर जो लाभ हाथ लगा, वह अन्यायपूर्ण है! यह जानते हुए भी तुम लालच में आ गये। यह तुम्हारी ग़लती है।"

फिर कवि से कहा—"तुम ने अपनी योग्यता से कहीं अधिक यश की इच्छा की, यह तुम्हारी ग़लती थी।"

राजा ने धनी युवक की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—"तुमने योग्यता न रखते हुए भी घूस देकर दरबार में ऊँचा पद प्राप्त करने की कोशिश की, यह तुम्हारी भूल थी।"

अब तीनों ने लज्जा के मारे अपने सिर झुकाये। तीनों भली भाँति समझ गये कि जिन लोगों में किसी प्रकार की कमज़ोरी नहीं होती, दग़ाबाज़ उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

# चन्दामामा पुरवणी-१२
# ज्ञान का ख़ज़ाना

## कौन है वह?

एक यायावर साधु किसी घर में अतिथि बन कर पहुँच गये । उस घर की मालकिन तथा उसकी पुत्री ने साधु को देख बड़ी श्रद्धा से उसका स्वागत किया । उनके आतिथ्य पर प्रसन्न होकर साधु ने कुछ दिन उसी घर में बिताये । मालकिन की कन्या ने उस साधु की दिन-रात सेवा की । साधु के चरणों में बैठकर उनके मुँह से कृष्ण की लीलाएँ उसने बड़ी अभिरुचि के साथ सुनीं । साधु के पास श्रीकृष्ण की छोटीसी प्रतिमा थी । प्रतिमा देख मुग्ध हो कर वह कन्या उसके सामने नाचने व गाने लगी ।

एक दिन बड़े सबेरे साधु उस घर से चले गये । नीन्द से उठने पर साधु व अपनी प्राणप्रिय प्रतिमा न देख लड़की अत्यन्त दुखी होकर रोने लगी । उसने हठ किया कि उस प्रतिमा को देखे बिना वह पानी तक न पिएगी । कोई भी उसका समाधान नहीं कर सका ।

इधर वह साधु उस रात एक मन्दिर देख कर उस में सो गये । सपने में प्रतिमा के लिये रोती वह कन्या उन्हें दिखाई दी । साधु को लगा कि प्रतिमा में बसे भगवान भी उस लड़की के पास पहुँचना चाहते हैं । तुरन्त उस घर को लौट आये व अपनी प्रतिमा उन्होंने लड़की को दे दी ।

यह लड़की कौन थी?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

## क्या आप जानते हैं?

१. ब्रिटिश राजपरिवार में स्थित, प्राचीन काल का विख्यात भारतीय रत्न कौनसा है?
२. मुगलों के आक्रमणों से अनेक साल तक अहमदनगर की रक्षा करनेवाली वीर नारी कौन थी?
३. स्वतन्त्र भारत में विलयन हुआ, विदेशी अधिकार में स्थित अंतिम प्रान्त कौनसा है?
४. विश्वभर में सब से छोटी चुहिया कौनसी है?
५. उसका वज़न कितना होता है?
६. अत्यन्त भयंकर विनाशकारी भूकम्प कब और कहाँ हुआ था?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

## भारत—तब और अब

# दण्डकारण्य

हमारे पुराण तथा इतिहास की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का मंच तथा साक्षी बनकर खड़ा है दण्डकारण्य! प्राचीन काल से यह प्रदेश अनेक महामुनियों का निवास स्थान रहा है । कहा जाता है, कि दण्डकारण्य में राक्षस भी रहा करते थे । सीता, राम और लक्ष्मण ने भी कुछ साल इसी अरण्य में बिताये थे । राम, सीता और लक्ष्मण के निवास से यहाँ के कई स्थान पावन हुए हैं ।

दण्डकारण्य के एक तरफ़ गोदावरी, तथा दूसरी तरफ़ नर्मदा बहती है । मत्स्यकुंड, इन्द्रावती, वंशधारा, नागावली, तमसा इत्यादि नदियाँ इसी महारण्य से होकर बह रही हैं । यह महारण्य वर्तमान समय के मध्यप्रदेश, ओरिसा, महाराष्ट्र तथा आन्ध्रप्रदेश तक व्याप्त है ।

प्राचीन काल में दण्डक नाम का एक राजा इस अरण्य में संचार कर रहा था, तब उसे अरज नामक एक लावण्यवती मुनिकुमारी दिखायी दी । उसे देखते ही राजा उस पर आसक्त हो गया, और किसी न किसी तरह उसे अपनाना चाहा । राजा ने उसे ज़बरदस्ती

से अपने साथ ले जाने का प्रयत्न किया। लेकिन वह युवती बचकर भाग निकली और अपने पिता शुक्र को उसने इस अपमान का वृत्त सुनाया। क्रोध में आकर शुक्र ने राजा को शाप दिया कि, उसकी राजधानी जलकर भस्म हो जाएगी। कहा जाता है कि, दूसरे ही पल वह नगर अग्निज्वालाओं से भस्मीभूत हो गया। कालान्तर में वहाँ एक अरणय उग आया। माना जाता है कि इस प्रदेश पर दण्डकारण्य हो गया।

आज का दण्डकारण्य वनसंपदा का आगर बना हुआ है। प्राकृतिक सुंदरता के लिए मशहूर ऐसे कई स्थान इस अरण्य में अत्र-तत्र बिखरे हैं। हमारे देश को सुनिश्चित तरह से जलवायु प्रदान करने में इस दण्डकारण्य का बड़ा हाथ है।

लेकिन इधर लकड़ी काटनेवालों की अधिक संख्या के कारण यहाँ के जंगल नष्ट होते जा रहे हैं। 'पूर्वी घाटियाँ' नाम से प्रसिद्ध इस अरण्य के पहाड़ों की भी हानि होती जा रही है।

## टाइपरायटिंग चैम्पियन

हिमालय प्रदेश के सोलान ज़िले के चियान गाँव के ४५ वर्षीय निवासी राजिन्दरसिंह नाम के दंतवैद्य टाइप करने की स्पर्धा में तीसरी बार विश्वचैंपियन चुने गये।

ड्रेस्टन में संपन्न १८ वीं विश्वचैम्पियन प्रतियोगिता में भाग लेकर अपने जन्म के पाँच साल पूर्व निर्मित रेमिंगटन टाइपरायटर पर, फी मिनट ४९९ अक्षर टाइप करके राजिन्दरसिंह ने स्वर्णपदक प्राप्त किया है।

# चन्दामामा के संवाद

## सफ़ेद बाघ का शावक

कलकत्ते के अलिपुर चिड़ियाघर में पहली ही बार जन्मा एक सफ़ेद बाघ-शावक, उसकी माँ-'हिमाद्रि ज्यूनियर' के साथ हाल ही में दर्शकों को देखने के लिये दो घण्टे तक रखा गया। काली धारियों वाला यह खूबसूरत शावक पिछले ३ मई को पैदा हुआ। जन्म के बाद तीसरी बार धूप का सेवन करनेवाला यह शावक पिंजड़े में इधर-उधर टहलने लगा है। इस शावक को सदा अपनी माँ के साथ ही रखा गया है। माँ भी इसको छोड़कर रहना पसन्द नहीं करती है।

# साहित्यावलोकन

१. राबिन्सन क्रूसो का नमूना बनकर रहा व्यक्ति कौन?

२. अंग्रेजी उपन्यासकार जार्ज इलियट का वास्ततिक नाम क्या है?

३. विशाल पुस्तकालय वाला प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय कौनसा है?

४. चन्द्रगुप्त मौर्य की कथा का परिचय देनेवाला संस्कृत नाटक कौनसा है?

५. प्लेटो द्वारा रचित उत्कृष्ट ग्रन्थ का नाम क्या है?

६. प्लेटो कब जीवित थे?

# उत्तरावलि

## कौन है वह?

भक्त कवयित्री मीराबाई

## क्या आप जानते हैं?

१. कोहिनूर रत्न ।

२. चांदबीबी ।

३. गोवा ।

४. इटली से संबंधित एट्रूस्कान चुहिया ।

५. एक औंसका दसवाँ हिस्सा ।

६. ७४२ में । ईजिप्त, पलिस्तिन, सीरिया के लगभग ३०० शहरों को ध्वस्त किया था ।

## साहित्य

१. अलेक्झांडर नेलकर्क ।

२. मेरिअन इव्हान्स ।

३. नालन्दा विश्वविद्यालय ।

४. विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' ।

५. 'दी रिपब्लिक' ।

६. ई.स.पू. ५ से ४ शताब्दि में ।

# नेहरू की कहानी - १०

पं. नेहरू जेल से मुक्त होते ही अपने अस्वस्थ पिता को देखने मसूरी चले गये । उनके कुछ स्वस्थ होने पर दोनों इलाहाबाद लौट आये । एक दिन शाम को जवाहरलालजी ने किसानों की एक विशाल सभा में भाषण दिया ।

व्याख्यान समाप्त होने पर पं. नेहरू अपनी पत्नी के साथ पिता के दर्शन करने घर की ओर चल पड़े । वे अपने मकान के प्रवेश-द्वार पर पहुँचे ही थे कि पुलिस उनको क़ैद करके जेल में ले गई ।

कमला नेहरू अकेली घर में पहुँची और अपने ससुरजी को सब समाचार सुनाया । सब कुछ सुन कर पं. मोती-लालजी को बड़ा दुख हुआ । उसी क्षण शांति के साथ उन्होंने एक निर्णय लिया ।

मोतीलालजी बिस्तर से झट उठ बैठे । मेज़ पर अपनी मुठ्ठी से दो बार प्रहार करते हुए कहा — "मैं अब यों लेट कर इस अन्याय और अत्याचार को सहन नहीं करूँगा ।" वैसे उनका शरीर दुबला ज़रूर हो गया था, पर उसमें एक भारी सशक्त मन का वास था ।

इस संदर्भ में कांग्रेस के नेताओं ने स्थान-स्थान पर सभा-समारोहों का आयोजन किया । पं. जवाहरलाल को क़ैद करने पर ब्रिटिश सरकार का विरोध करने के लिए पं. मोतीलालजी ने जो भाषण तैयार किया था, उसे जनता को पढ़कर सुनाया गया । ऐसी सभाओं को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने सर्वत्र लाठियों का प्रयोग किया ।

इस आन्दोलन में जिन लोगों ने हिस्सा लिया उनको डराने के लिए सरकार ने उन्हें न केवल जेलों में बन्द किया, बल्कि उन पर कोड़े लगवाये । यह घटना न केवल अपमानजनक थी, बल्कि शारीरिक दृष्टि से भी बड़ी पीडादायक थी ।

कोडे लगाने का विरोध करने के लिए पं. जवाहरलाल तथा उनके सहकारियों ने जेल में चार दिन अनशन किया । इससे सरकार की जंगली प्रवृत्ति का जनता को परिचय हुआ ।
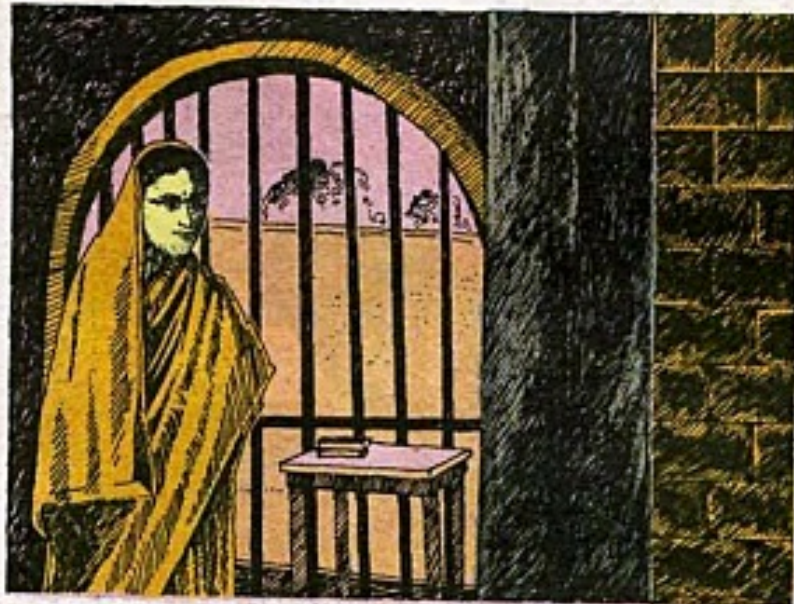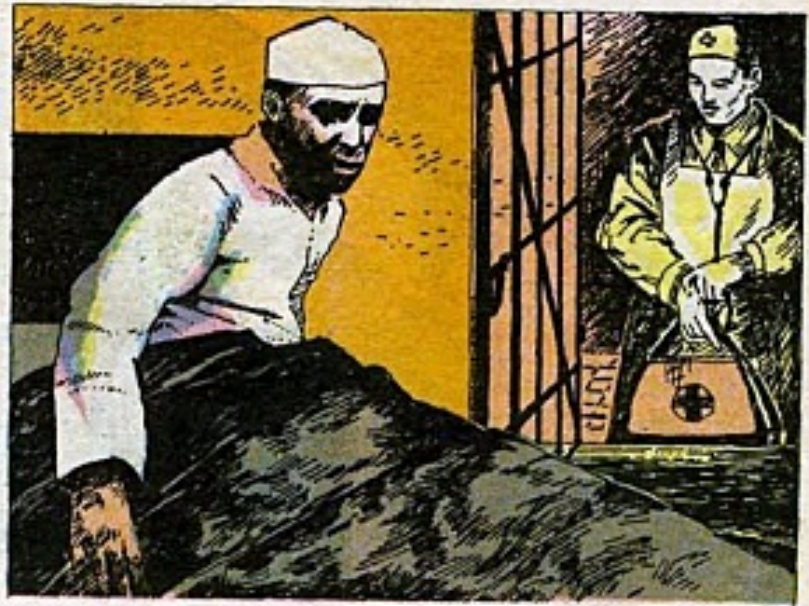
पं. जवाहरलालजी की देखादेखी श्रीमती कमला नेहरू ने भी काँग्रेस के इन कार्यक्रमों में सक्रिय हिस्सा लिया और जेल की सज़ा का भोग किया । उन्होंने कहा — "अपने पति के चरण-चिन्हों पर चलने में मैं आनन्द और गर्व का अनुभव करती हूँ । मुझे विश्वास है कि इस आन्दोलन में जनता को अवश्य सफलता मिलेगी ।"

अब पं. मोतीलालजी का स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ गया । पं. जवाहरलाल तथा श्रीमती कमला नेहरू जेल से मुक्त किये गये । कई प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ नेहरू पति-पत्नि पं. मोतीलाल को देखने गये । उस समय वहाँ महात्मा गाँधीजी भी पहुँच गये थे ।

गांधीजी को देख पं. मोतीलालजी ने कहा—"महात्माजी, मैं शीघ्र ही आप सब लोगों से बिदा लेनेवाला हूं । संभवतः हमारा देश स्वतंत्र हुआ है यहं मैं नहीं देख सकूँगा । आप हमारे देश को अवश्य गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त करेंगे । मैं जानता हूँ कि स्वराज्य हमें शीघ्र ही प्राप्त होगा ।" इस पर गांधीजी ने बड़े ही स्नेह-भाव से सांत्वना दी ।

पं. मोतीलाल के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए सर्वश्री एम्.ए. अन्सारी, विधनचन्द्र राय, जीवराज मेहता आदि प्रासिद्ध डाक्टरों ने (ये सब काँग्रेस के नेता थे) भरसक प्रयत्न किये । वे सब बेकार रहे । अंत में ६ फरवरी १९३१ को पं. मोतीलालजी का निधन हुआ । अंतिम घड़ी में मोतीलाल के पास पुत्र जवाहरलाल और उनकी माता उपस्थित थीं ।

इलाहाबाद के पास गंगा नदी के किनारे पं. मोतीलाल नेहरू के भौतिक शरीर का दहन-संस्कार हुआ । इस संबंध में पं. जवाहरलाल ने लिखा था—"लाखों भारतवासियों के प्रिय पात्र तथा आत्मीय पं. मोतीलाल के भौतिक शरीर को संध्या के समय गंगा के तट पर अग्निज्वालाओं ने भस्म किया ।"

(सशेष)

# मुझे इन्साफ चाहिए!

कन्हैयालाल गाँव का सब से अमीर आदमी था । एक दिन वह गाँव की गली में से गुज़र रहा था और सड़क के किनारे कुछ लड़के गुल्ली-डंडा खेल रहे थे । एक लड़के ने डंडा मारा जो कन्हैयालाल को जा लगा । इसपर वह क्रोध में आ गया और उस लड़के को पीटने के लिये दौड़ पड़ा । मगर वह लड़का भाग निकला ।

"कौन था वह लड़का?" कन्हैयालाल ने बाकी लड़कों से पूछा ।

"वह टोकरियाँ बुननेवाले करमचन्द का बेटा है ।" एक बच्चे ने जवाब दिया ।

कन्हैयालाल ने घर जाकर करमचन्द को बुलवाया । उसके आते ही करमचन्द ने कहा, "तुम्हारे बेटे ने मुझे मारा है, उसको यहाँ ले आओ ।"

"उसने आप को जान बूझकर नहीं मारा है । बच्चे खेल रहे थे, लकड़ी हाथ से फिसल गयी और आप को जा लगी—बच्चे ने घर आते ही मुझ से कहा था सब कुछ । आप उसको क्षमा कर दीजिये । आइन्दा वह रास्ते पर नहीं खेलेगा ।" करमचन्द ने बड़े विनयपूर्वक प्रार्थना की ।

"कुछ भी हो, उसने मुझे मारा है; इसलिये मेरा भी उसे मारना न्यायसंगत होगा ।" कन्हैयालाल ने बच्चे की पिटाई करने की ही ठानी थी ।

इसपर खीझकर करमचन्द बोला, "आप को उसीने ही मारा है, इस बात का आप के पास क्या सबूत है? आप न्याय की बात कर रहे हैं, तो न्यायाधिकारी के पास जाकर शिकायत कीजिये ।" और वह वहाँ से चला गया ।

करमचन्द जैसे निर्धन व्यक्ति से ऐसी रोष-भरी बातें सुनकर धनवान कन्हैयालाल को बहुत बुरा लगा । वह तुरन्त न्यायाधीश

के पास शिकायत करने चल पड़ा । रास्ते में शान्तिभूषण से उसकी मुलाकात हुई । उसने पूछा, ''कन्हैयालालजी, किधर जा रहे हैं आप? क्या बात है? परेशान नज़र आ रहे हैं!''

इसपर कन्हैयालाल ने शान्तिभूषण को सारा समाचार सुना दिया ।

मुस्कुराकर शान्तिभूषण ने अपना अभिप्राय प्रकट किया, ''कहावत है न कन्हैयालालजी, कि अपना क्रोध ही अपना दुष्मन होता है? एक नासमझ बालक से छोटी सी गलती हो गयी, तो आप इतने नाराज़ क्यों होते हैं?''

कन्हैयालाल इसपर जलभुन कर बोला, ''वाह! आप ने तो बहुत ही बढ़िया सलाह दी है ।''

''तब तो आप ज़रूर न्यायाधीश के पास ही जाइये ।'' शान्तिभूषण ने व्यंग्य से कहा ।

कन्हैयालाल ने न्यायाधीश के पास पहुँचकर सारा किस्सा सुनाया । मन्दहास करते हुए न्यायाधीश ने कहा, ''भाई, आप तो तिल का ताड़ बना रहे हैं । छोटे से बालक से कैसा प्रतिशोध? कोई सुने तो हँसेगा ।''

''मैं आप से इन्साफ़ माँगने आया हूँ ।'' कन्हैयालाल ने गरज कर कहा ।

फिर भी न्यायाधीश ने शान्तिपूर्वक कहा, ''ऐसी बातें मुझ तक नहीं ले आनी चाहिये । हमारे ही गाँव में शान्तिभूषण हैं; उनसे सलाह कीजिये ।''

''उसने मेरे प्रति न्याय नहीं किया है, बल्कि खोखला उपदेश ही दिया ।'' कन्हैयालाल तपाक से बोल उठा ।
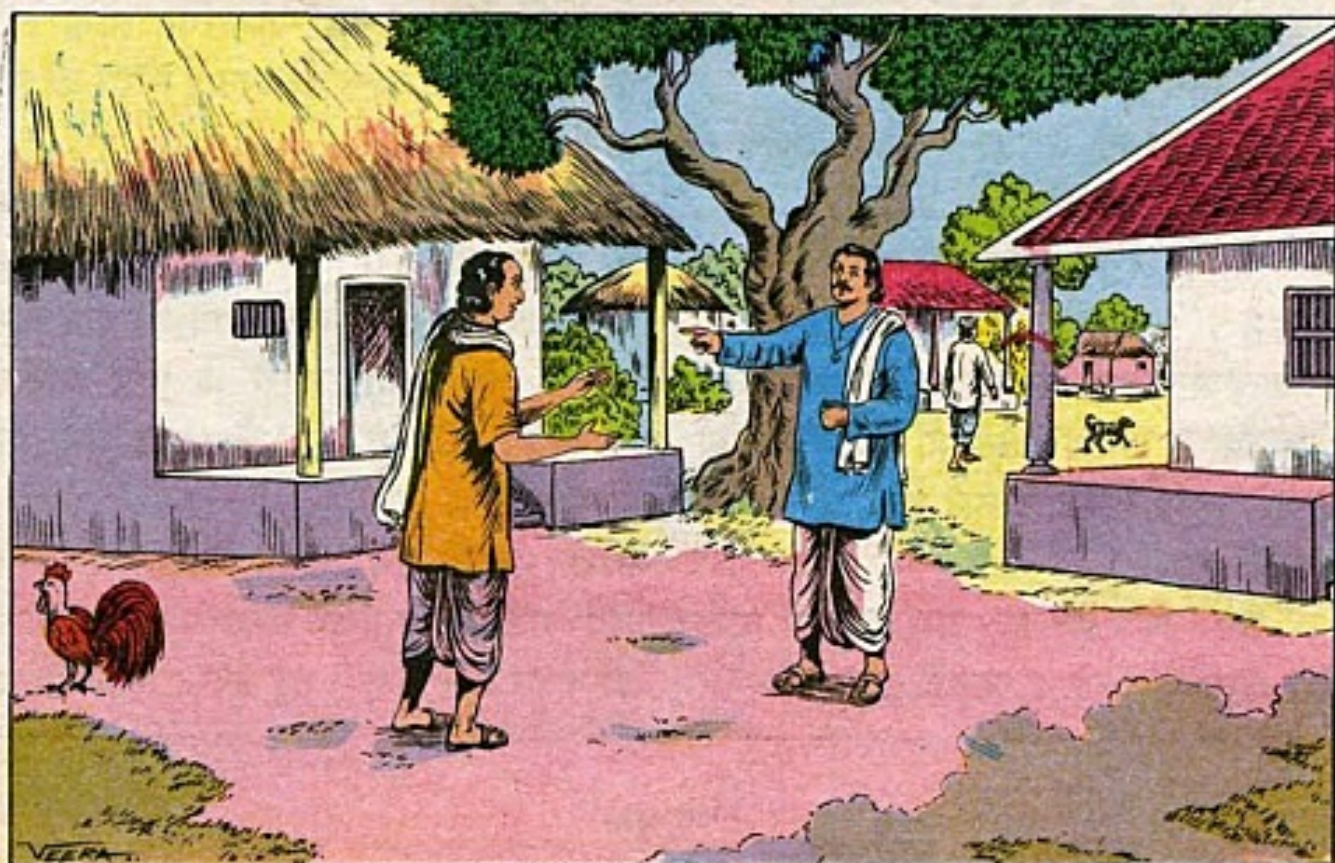
"अच्छी बात है, मेरे कहने पर शान्तिभूषण आप के प्रति न्याय भी करेंगे। उनसे यदि न होगा, तो मैं खुद इन्साफ़ करूँगा।" न्यायाधीश ने कहा; और शान्तिभूषण को बुलवा लिया। उसने शान्तिभूषण से पूछा, "मैंने सुना कि कन्हैयालाल ने आप से इन्साफ़ चाहा, तो आप ने उन्हें खाली उपदेश दे दिया!"

"क्यों नहीं? मगर कन्हैयालाल मेरे दोस्त हैं। मैं जानता हूँ कि किस प्रकार उनका हित हो सकता है। इस छोटी सी बात के लिये अगर वे ज़िद पकड़ने लगें, तो इसमें उनका अपमान निश्चित है।" शान्तिभूषण ने जवाब दिया।

"लोग अगर यह सोचते हैं कि मैं एक छोटे बालक के प्रति प्रतिशोध की भावना रखता हूँ, तो वे भले ही वैसे सोचें, उसमें मेरा अपमान वगैरह कुछ नहीं होगा। मुझे तो न्याय चाहिये, बस!" कन्हैयालाल अपनी ही ज़िद पर अडिग रहा।

"तब तो फिर गुल्ली-डंड़े के खेल का प्रबन्ध किया जाय। और कन्हैयालाल को चाहिये कि वह निशाना लगाकर दूर पर चलनेवाले करमचन्द के बेटे पर डंडा मारें। यही न्यायसंगत होगा।" शान्तिभूषण ने इन्साफ़ की बात कही।

कन्हैयालाल इसपर बड़ा खुश रहा; मगर उसने फिर पूछा, "यह बात तो ठीक है। लेकिन मेरे डंड़ा मारते समय वह भाग जाए तो?"

"दो आदमी उसे कसकर पकड़ रखेंगेऔर भागने से रोकेंगे। मगर शर्त यह है, कि आप
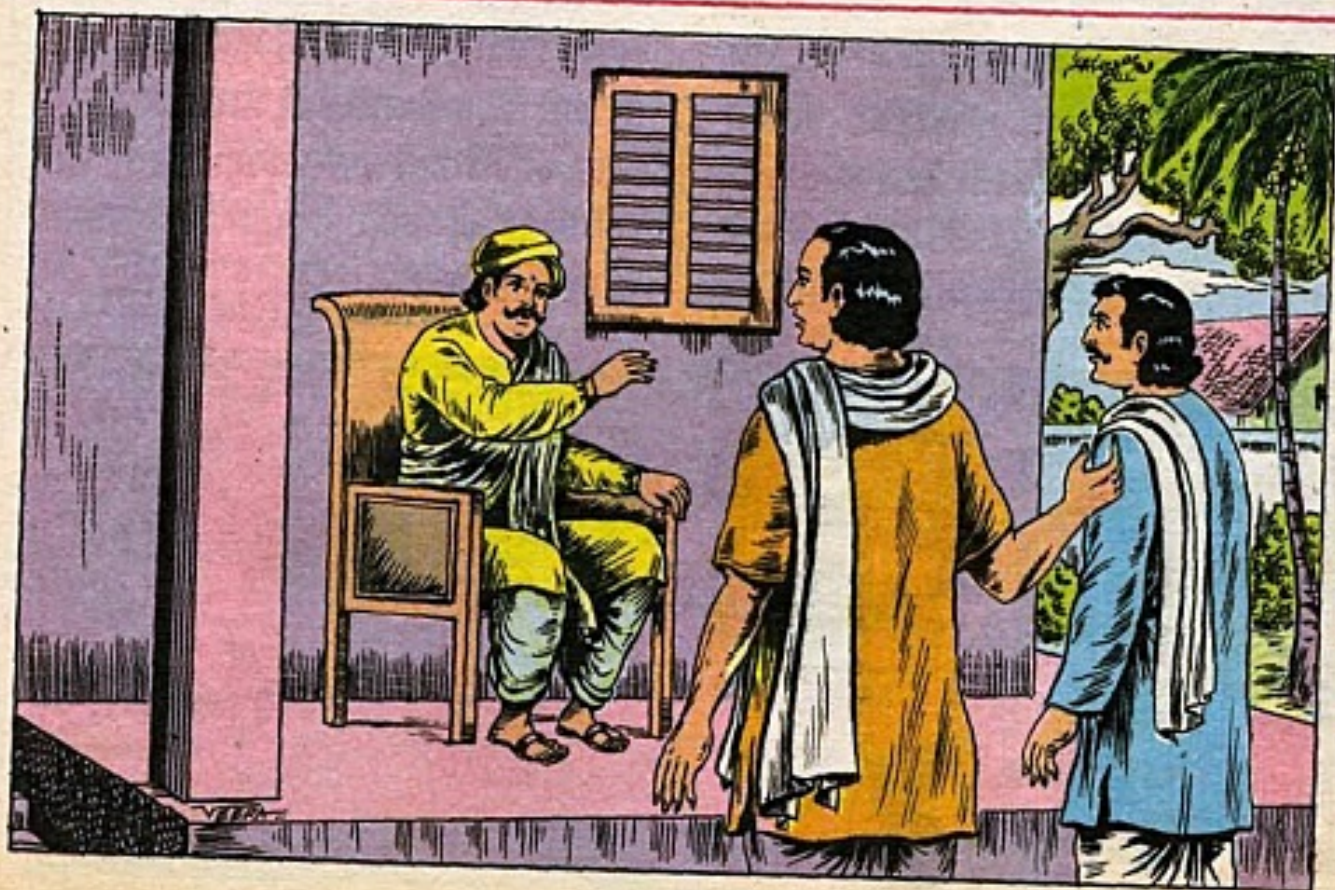
के डंडे की मार केवल लड़के पर ही पड़नी चाहिये; दूसरों पर नहीं। कबूल—?" शान्तिभूषण ने शर्त रखी।

"नहीं, न्याय तो यह होगा कि वह बिना हिले वहीं खड़ा रहे।" कन्हैयालाल ने कहा।

"पर करमचन्द का बेटा इस शर्त को माने, तभी न्याय होगा। वह छोटा है न? भय के मारे अगर वह भाग जाये, तो हम क्या कर सकते हैं?" शान्तिभूषण ने कहा।

दूसरे दिन गुल्ली-डंडे के खेल का प्रबन्ध हुआ। इस विचित्र दण्ड को देखने के लिये गाँव के सारे लोग वहाँ इकठ्ठा हुए। ख़ास बात तो यह थी, कि करमचन्द के बेटे ने यह शर्त मान ली, कि उसको किसी के पकड़ रखने की ज़रूरत नहीं है। वह वहीं बिना भागे स्थिर खड़ा रहेगा।

इसके बाद कन्हैयालाल ने डंड़ा मारा, मगर उसका निशाना चूक गया। उसे तीन बार मौका दिया गया, मगर फिर भी वह करमचन्द के लड़के को मार न सका।

"अब सज़ा पूरी हो गयी है। मौक़ा देनेपर भी आप प्रतिशोध नहीं ले पाये, यही साबित हो गया है।" शान्तिभूषण ने हँसकर कहा।

शान्तिभूषण की बात सुनकर वहाँ उपस्थित सब लोग ठहाके मारकर हँसने लगे। अब शान्तिभूषण ने लड़के को बुलाकर पूछा, "अरे, तुम तो बड़ी हिम्मत के साथ बिना हिले-डुले खड़े रहे? मैं तुम्हारी हिम्मत की दाद देता हूँ। तो फिर उस दिन कन्हैयालाल जब तुम को पकड़ने दौड़ा तब तुम भाग क्यों निकले?"

लड़के ने झट उत्तर दिया, "उस दिन यदि मैं इन के हाथ लगता, तो कसकर मेरी पिटाई न होती? मगर आज की बात अलग है। मैंने सुना था, कि बचपन में मेरे बापू और कन्हैयालाल गुल्ली-डंड़ा खेला करते थे। बापू ने कहा था कि ये निशाना साध कर मार नहीं पाते हैं। इसीलिये तो मैं बेखटके सामने खड़ा रहा।"

इसपर वहाँ इकठ्ठा लोगों में फिर एक बार हँसी फूटी। कन्हैयालाल ने शरम से अपना सिर झुका लिया। फिर कभी उसने ऐसी छोटी बातों को लेकर इन्साफ़ का दरवाज़ा नहीं खटखटाया।
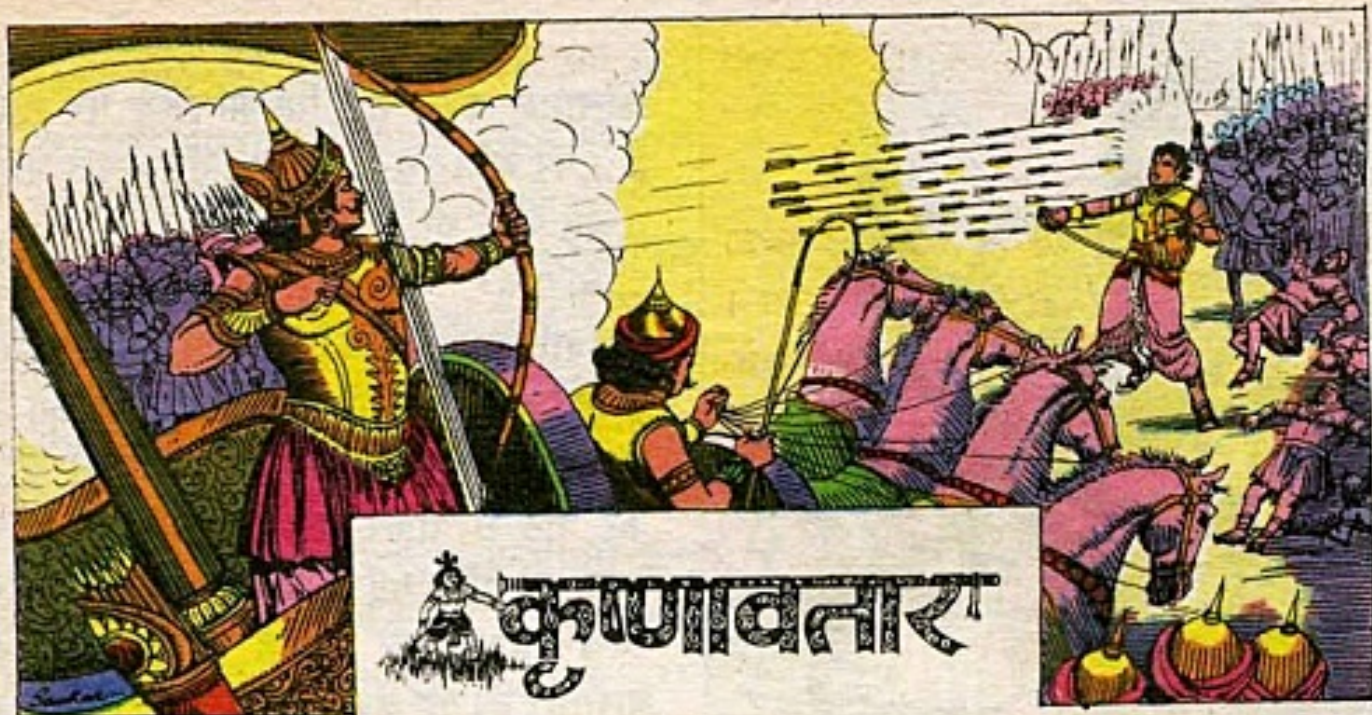
बाणासुर का रथ एक हज़ार हाथ लंबा था । उसमें एक हज़ार घोड़े जुते हुए थे । रथ पर भालू का चमड़ा बिछा हुआ था । एक लाल झंड़ा और मयूर पताका रथ को सुशोभित बना रहे थे । रथ में गदा, धनुष-बाण, तलवारें आदि अनेक अस्त्र-शस्त्र भरे थे । कुंभाण्ड को अपना सारथी बनाकर बाणासुर अनिरुद्ध से लड़ने के लिए निकल पड़ा । यह सब देख सभी सेनापतियों में अपूर्व उत्साह भर गया और वे अपनी सेनाओं के साथ रथ के आगे-पीछे चल निकले । अपराधी अनिरुद्ध को उसके अपराध के योग्य कड़ी से कड़ी सज़ा देने का बाणासुर का विचार था ।

अनिरुद्ध ने दूर ही से उस पर आक्रमण करने निकले बाणासुर, उसके विविध आयुध और चारों तरफ फैली सेना को देखा । पर ज़रा भी न डरते हुए वह सीधे बाणासुर के रथ की ओर अग्रसर हुआ । एक तरफ़ बाणासुर जैसा महान योद्धा और उसकी प्रचंड सेना, व दूसरी तरफ एक अकेला यह युवक लड़ने के लिए आगे बढ़ रहा है! अद्भुत दृश्य था वह!

एक साधारण मनुष्य को किसी विशेष प्रकार के आयुधों के बिना साहसपूर्वक अपनी ओर बढ़ते देख बाणासुर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । उसने गरजकर अपने राक्षस सैनिकों को आदेश दिया—"तुम लोग देख क्या रहे हो? इस दुष्ट को बंदी बनाकर मार डालो ।" इसने हमारी अनुमति के बिना हमारी नगरी में प्रवेश कर उत्पात मचाया है । इस अपराध का उचित दंड है मैत! मार डालो इसको । और फिर उसने अनिरुद्ध की

ओर बाणों की वर्षा की ।

अनिरुद्ध के हाथ में एक तलवार मात्र थी । फिर भी शत्रु के बाणों की परवाह किए बिना उसने आक्रमणकारी राक्षसों को इधर-उधर ढकेल दिया और वह बाणासुर के रथ के सामने पहुँच गया । बाणासुर के पराक्रम को जाननेवाले योद्धा उसके सामने आते हुए भयभीत होते थे । यह युवक निडर होकर आगे बढ़ रहा था । अनिरुद्ध का यह साहस देख कर सभी योद्धा चकित हो गये ।

रथ के पास पहुँचकर अनिरुद्ध उसमें जुते घोड़ों का वध करने लगा । खून की नदियाँ बह निकलीं । इस बीच बाणासुर ने अनिरुद्ध पर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया । अब राक्षस-गण यह सोच कर कोलाहल करने लगे कि अनिरुद्ध मर गया है । पर अनिरुद्ध मरा न था, वह केवल आगे न बढ़ पाया था ।

बाणासुर ने इतने में अनिरुद्ध पर महाशक्ति का प्रयोग किया । पर अनिरुद्ध ने उसको अपने हाथ में कस कर पकड़ लिया । वह महाशक्ति बाणासुर के छाती को चीर कर पीठ से होकर बाहर निकल गई और पृथ्वी में धँस गई । बेहोश हो बाणासुर ध्वज-स्वम्भ को पकड़ लुढ़क पड़ा । बाणासुर की यह अवस्था देख कर सभी प्रमुख योद्धा विस्मय में आ गये । अनिरुद्ध के प्रति सब के मन में एक विचित्र भय पैदा हुआ । यह कोई असाधारण शक्तिशाली मानव दिखाई देता है!

सारथी कुंभाण्ड बाणासुर को होश में लाया और उसने उसे समझाया—"लगता है, हमारा शत्रु असामान्य पराक्रमी है । सारी दुनिया उस पर चढ़ आये, तो भी वह उसकी परवाह नहीं करेगा । उसका साहस और पराक्रम आपने प्रत्यक्ष देख लिया न? उसको पराभूत करना सहज संभव नहीं है । आपके और मेरे प्राणों को बचाने की बात पहले सोचने होगी । वरना यह हमारे राक्षस-वंश का सर्वनाश कर बैठेगा । आज तक आपने अनेक महान पराक्रमी योद्धाओं का सामना किया और उनको युद्ध में हराया । पर अब आपको पराभूत होता पड़ रहा है!"

बाणासुर ने कहा—"अब देखते रहो, मैं इस मूर्ख को किस प्रकार बन्दी बनाता हूँ, जैसे

गरुड़ सर्प को पकड़ लेता है।" फिर बाणासुर अदृश्य हो गया और उसने अनिरुद्ध पर कृष्ण-सर्प के मुखवाले बाणों से प्रहार करना शुरू किया। उसके सारे अवयवों को बाँध कर उसे अविचल बना दिया। उसने कुंभाण्ड से कहा—"यौवन के मद में मस्त यह दुष्ट युवक हमारे हाथों में अब अच्छी तरह फँस गया है। तत्काल इसका सिर उड़ा देंगे। नहीं, उसको इसी अवस्था में कुछ समय रखकर तमाशा देखेंगे। अब उसको मालूम होगा कि बाणासुर के साथ युद्ध करके उसे पराभूत करना कितना कठिन कार्य है!"

इस पर कुंभाण्ड ने समझाया—"आपकी बात तो ठीक ही है, पर एक और बात का भी ख्याल कीजिएगा। इस युवक ने पहले ही आपकी पुत्री उषा से गांधर्व विवाह कर लिया है। अगर इसके साथ कुछ दुर्घटना हुई तो उषा को कैसा अपार दुख होगा यह भी ज़रा सोच लीजिए। इसके साथ हमें यह बात भी मालूम करनी है कि यह युवक आखिर है कौन? कहाँ से यहाँ आन टपका? यह निश्चय ही कोई साधारण मनुष्य नहीं है। सौंदर्य और पराक्रम में देवता भी इसकी बराबरी नहीं कर सकते! यह अवश्य ही कोई महान व्यक्ति होगा। आप जैसे महावीर के साथ इसने जिस निर्भयता से युद्ध किया, उसे देखते ही बना। असहाय्य होने हुए भी उसके मुख पर जो क्रोध उबल रहा है, देखिए तो! क्या आपको इससे बढ़कर श्रेष्ठ दामाद और उषा बेटी को इससे सुयोग्य पति मिल सकता है? आपके लिए इससे बढ़कर तेजस्वी प्रतिद्वंद्वी विश्व भर में मिलेगा? इन सब बातों को समझ लेंगे? आवेश के अभिभूत होकर तुरन्त कोई निर्णय लेना इस समय उचित न होगा। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उस पर ग़ौर से सोचिए। वरना बाद में पछताना पड़ेगा। और तब पछताने से भला फायदा ही क्या?

इस लिए क्रोध के वशीभूत होकर झट कुछ न कर बैठिए।"

कुंभाण्ड की इन सब बातों में बाणासुर को तथ्य नज़र आया। अपनी स्वीकृति दिखाते हुए बाण ने सिर हिलाया और अपने कुछ चुनिन्दा योद्धाओं को अनिरुद्ध के पहरे पर नियुक्त करके अपने महल की ओर प्रस्थान किया।

अब नारद अनिरुद्ध के पास आये और उसे सान्त्वना देते हुए बोले—"मैं अभी जाकर श्रीकृष्ण को लिवा लाता हूँ । उनके आने पर तुम्हारे सारे कष्ट सहज दूर हो जाएँगे । तब तक तुम धैर्यपूर्वक जो बीती है, उसे सहन कर लो । तुमने जो कुछ किया, मैंने अपनी आँखों से देख लिया । तुम महान् पराक्रमी हो । पर अब तुम्हारी परीक्षा का समय है । हिम्मत से काम लो । श्रीकृष्ण को यहाँ पहुँचने में बहुत विलंब न होगा ।" इतना कहकर नारद वहाँ से चले गये ।

इसके बाद अनिरुद्ध ने सिर उठाकर ऊपर देखा । आँसू बहाती हुई उषा खिड़की के पास दिखाई दी । उसने उषा से कहा—"तुम्हारे पिताजी आमने-सामने मुझ से युद्ध नहीं कर पाये, इसी लिए मायाजाल से मुझे यों बन्दी बनाकर चले गए । फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है । महान् पराक्रमी श्रीकृष्ण मेरे कष्टों को दूर करनेवाले हैं । उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र से अब तक कई राक्षसों का संहार कर दिया है । मेरे इस पराभव को वे ज़रा भी सहन नहीं कर सकेंगे । तुम ज़रा भी चिन्ता मत करना । तुम्हारे पिता के अंतिम दिन निकट आये हैं । श्रीकृष्ण के पास सब समाचार पहुँच रहा है । वे तुरन्त ही यहाँ पधारकर बाणासुर को उसके अपराध का उचित दण्ड देंगे ।"

फिर अनिरुद्ध ने दुर्गा के स्तोत्र का पाठ किया और ध्यान किया । कुछ ही समय में लोकेश्वरी दुर्गा उसके सामने प्रत्यक्ष हुई । बाणों के जिस पिंजड़े ने अनिरुद्ध को बन्दी बनाया था, उसे स्पर्श करके तोड़ दिया । बंधन-मुक्त हुए अनिरुद्ध से उसने कहा—"शीघ्र ही श्रीकृष्ण स्वयं यहाँ आकर बाणासुर से युद्ध करेंगे और उसे पराभूत करके तुम्हें अपने साथ ले जाएँगे । तुम्हारा कल्याण होगा ।" फिर दुर्गा अंतर्धान हो गई ।

इधर द्वारका में बहुत हलचल मची । चित्ररेखा के अनिरुद्ध को ले जानेके बाद अनिरुद्ध की सभी पत्नियाँ होश में आ गईं और अपने पति को न देख कर ज़ोर-शोर से विलाप करने लगीं । उनको बड़ी चिन्ता हुई कि जो अनिरुद्ध अभी अभी यहाँ थे, वे अचानक उन्हें छोड़ कहाँ चले गये? अगर जाते तो कह कर न जाते!

अनिरुद्ध के महल में स्त्रियों का विलाप सुन कर नगर के सभी यादव-प्रमुख अपने निवास-स्थानों को छोड़ बाहर निकल आए। सभा-भवन में भेरी बज उठी। श्रीकृष्ण, बलराम इत्यादि सभी तुरन्त सभा-भवन में पहुँच गये। अनिरुद्ध का पता न पाकर सब को बड़ी चिन्ता हुई। श्रीकृष्ण के नेत्रों से आँसू बह निकले।

यह देख श्रीकृष्ण को सान्त्वना देते हुए विकद्रु ने कहा—"महानुभाव, आपकी छत्र-छाया में समस्त यादव-वंश यहाँ सुरक्षित है। यहाँ तक कि देवेन्द्र इन्द्र भी अपनी सुरक्षा के लिए आप पर अवलंबित हैं। इस स्थिति में अगर आप व्याकुल होते हैं, तो अनिरुद्ध के अदृश्य होने का समाचार पाकर हम पर क्या गुज़रेगी? आपका यह कर्तव्य है कि आप हमें धीरज बँधाइए।"

इस पर श्रीकृष्ण ने कहा—"बंधु, मेरी चिंता केवल इस बात के लिए है कि अनिरुद्ध का पता न लगने पर सारे लोग मुझे क्या कहेंगे? प्रद्युम्न जब बालक था, तभी एक राक्षस उसे उठा ले गया था। प्रद्युम्न ने स्वयं उस राक्षस का वध किया था। इससे कुछ हद तक मेरी प्रतिष्ठा बच गई। लगता है, अब की बार भी कुछ ऐसा ही हो गया है। मेरे शत्रु ने प्रतिकार की भावना से यह काम किया है। यह कोई मामूली घटना नहीं है। तुम कुछ उपाय बता सकोगे? उसके आधार पर मैं अपना निश्चय लेकर करणीय करूँगा। अनिरुद्ध बिना किसी से कहे यहाँ से चला गया यह बड़े ही आश्चर्य की बात है! वह चला गया या हमारा कोई शत्रु उसे ले गया? वह जहाँ कहीं हो, सुरक्षित होगा न?"

सात्यकि ने सुझाया कि अनिरुद्ध को ढूँढ़ने के लिए चारों तरफ अपने लोगों को भेज दिया जाए। उग्रसेन ने सात्यकि के सुझाव का समर्थन किया और फिर अनिरुद्ध की खोज में कुछ लोग रथों पर सवार हो, कुछ घोड़ों पर और कुछ पैदल रवाना किये गये।

एक सेनापति अनादृष्टि ने संकोच के साथ श्रीकृष्ण से निवेदन किया—"क्षमा कीजिए, मेरे मन में एक संदेह हो रहा है। अनेक बार आपने देवताओं की सहायता अवश्य की है। लेकिन आप जब पारिजात वृक्ष को ले आए थे, तब इन्द्र ने आपसे युद्ध किया था और उसमें वे

हार गये थे । तो मुझे शक है कि कहीं इन्द्र ने ही तो अनिरुद्ध का अपहरण नहीं कर लिया न?''

यह बात सुन कर श्रीकृष्ण हँस पड़े । उन्होंने कहा—''देवता ऐसा काम कभी नहीं करेंगे । यह काम अवश्य राक्षसों का है । मैं नित्य देवताओं का उपकार ही करना आया हूँ । अत: ऐसा नीच कर्म देवता कभी नहीं कर सकते ।''

अक्रूर ने श्रीकृष्ण के कथन का समर्थन किया । श्रीकृष्ण ने और कहा—''अनिरुद्ध का अपहरण कोई पुरुष नहीं कर सकता । किसी पापात्मा नारी का ही यह कार्य है । दैत्य, दानव और देवता स्त्रियाँ ही अनेक माया-विद्याएँ जानती हैं । वे संकल्प मात्र से कहीं भी जा सकती हैं । किसी को भी डरा सकती हैं । यह सब ध्यान में रख कर हमें अनिरुद्ध को ढूँढ़ निकालना होगा ।''

यों कुछ दिन गुज़र गये । अनिरुद्ध को ढूँढ़ने गये यादव वीर अपने प्रयास में असफल हो लौट आए और वैसी श्रीकृष्ण को सूचना दी ।

दूसरे दिन श्रीकृष्ण सभा-भवन में पहुँचे । उग्रसेन, सात्यकि आदि सभी प्रमुख यादव भी वहाँ उपस्थित थे । इसी समय नारद आ पहुँचे । सब ने नारद का यथोचित आतिथ्य किया । सब की तरफ बारीकी से देखते हुए नारद ने पूछा—''यह क्या है! लगता है, आप सब लोग किसी गहरी चिंता में डूब गये हैं!''

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया—''क्या कहें? अनिरुद्ध का कहीं पता नहीं । हम ने सर्वत्र उसकी खोज की । पर सब बेकार!''

नारद ने समाचार देते हुए कहा—''तो अब सुनिये, आज तक मैंने अनेक युद्ध देखे हैं । पर आपके अनिरुद्ध ने बाणासुर के साथ युद्ध किया, वह अद्‌भुत और अपूर्व है । बात यह हुई कि बाणासुर की पुत्री उषा ने आपके अनिरुद्ध से प्रेम किया । उसने अपनी सखी चित्ररेखा को अनिरुद्ध के पास भेजा । उसने अनिरुद्ध को उषा के पास पहुँच दिया । यह समाचार पाते ही बाणासुर अनिरुद्ध से युद्ध करने आया, अनिरुद्ध ने उसे हराया, फिर भी अंत में माया-युद्ध करके बाणासुर ने अपने सर्प-बाणों से उसे बंदी बनाया है । अत: शीघ्र ही आप स्वयं जाकर बाणासुर को अच्छा
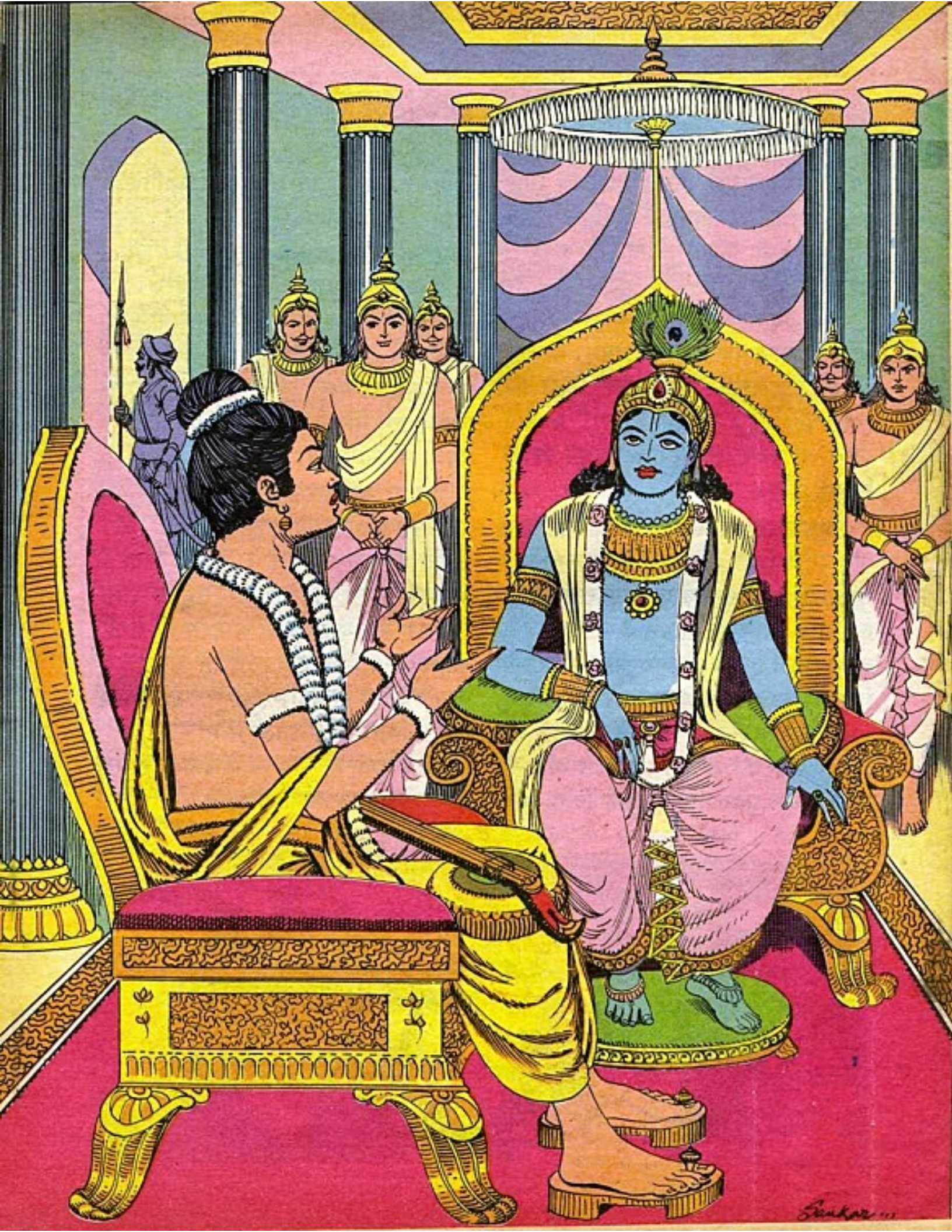
सबक सिखाइए। बाणासुर की राजधानी शोणपुर यहाँ से बहुत दूर है। इस लिए आप गरुड़ पर आरूढ़ होकर जाइए। यही समाचार आपको सुनाने मैं आया था। अब आप मुझे आज्ञा दीजिए।" फिर नारद वहाँ से रवाना हो गये।

अब श्रीकृष्ण ने गरुड़ का स्मरण किया। शीघ्र ही गरुड़ वहाँ पर पहुँच गया। तत्काल श्रीकृष्ण, बलराम और प्रद्युम्न गरुड़ पर सवार हो गये। वे जब शोणपुर के पास पहुँचे, तो उनको सामने एक अद्भुत प्रकाश दिखाई दिया।

"हम इस समय बाणासुर की राजधानी के पास पहुँच रहे हैं। शिवजी ने इस नगरी की सुरक्षा के लिए अग्नियों को नियुक्त कर रखा है। अब जो हमारे सामने है उसे अहवनी अग्नि कहते हैं। इसके साथ जो करणीय है, गरुड़जी कर लेंगे।" श्रीकृष्ण ने समझाया।

श्रीकृष्ण के मुँह से यह बात निकलने की देरी थी, कि बस गरुड़ ने आकाश-गंगा से जल लेकर अग्नि पर छिड़क दिया और निमिषार्थ में उसे बुझा दिया। इस पर श्रीकृष्ण ने गरुड़ की भूरि भूरि प्रशंसा की।

इधर अंगीरस नामक अग्नि ने ज्योतिष्टोम तथा विभांग नामक अग्नियों को अपने दाएँ-बाएँ रखकर अन्य अग्नियों की सहायता से श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए ललकारा।

श्रीकृष्ण ने अंगीरस को धमकाया—"हे अंगीरस, ऋषि-मुनियों द्वारा समर्पित आहुतियों को भक्षण कर हृष्ट-पुष्ट हो मद में आकर तुम मुझ से युद्ध करने आये हो? हट जाओ मेरे सामने से!"

इस पर अंगीरस क्रुद्ध होकर बोला—"मैं इस अस्त्र से तुम्हारे प्राण हर लेता हूँ।" और उसने श्रीकृष्ण पर एक शूल फेंक दिया। श्रीकृष्ण ने अपने बाण से उसका ध्वंस किया। और दूसरा बाण अंगीरस की छाती पर फेंका। अंगीरस रक्तरंजित होकर रथ पर ही बेहोश हो गया। यह दृश्य देख बाकी सभी अग्नि चारों दिशाओं में भाग गये।

उनके हटते ही श्रीकृष्ण के नेत्रों के सामने सारा शोणपुर स्पष्ट दिखाई देने लगा।

# पति का चुनाव

शिवपुरी में रामनाथ नाम का एक धनी आदमी रहता था । उसके एक इकलौती बेटी थी, जिसका नाम था लक्ष्मी । वह रूप-संपन्न थी । जब लक्ष्मी विवाहके योग्य हो गई तब रामनाथ उसके लिए सुयोग्य वर को खोजने लगा । लक्ष्मी के साथ विवाह करने के लिए कई युवक आगे आये, लेकिन रामनाथ और उसकी पत्नी ऐसे परिवार के युवक के साथ अपनी बेटी को ब्याहना चाहते थे, जो ज़मीन-जायदाद और धन-संपत्ति में उनकी हैसियत के बराबर हो । पर लक्ष्मी चाहती थी कि वह किसी सुशिक्षित युवक के साथ विवाह करे ।

शिवपुरी के पड़ोस में एक गाँव था गंगापुर । वहाँ के ज़मींदार विक्रमसिंह के एक ही पुत्र था । ज़मींदार स्वयं रामनाथ के घर आया और अपने पुत्र का विवाह लक्ष्मी के साथ करने की अपनी इच्छा प्रकट की । इसी प्रकार नगर के प्रमुख जौहरी कनकदास भी अपने बड़े पुत्र के साथ लक्ष्मी के विवाह की कामना करते थे ।

शिवपुरी की एक बहुत बड़ी पाठशाला में एक अच्छे अध्यापक थे धर्मनन्द । उनके विद्याधर नामक एक पुत्र था । वह एक सुशिक्षित सुसंस्कृत युवक था । उसने कृषि तथा वाणिज्य संबंधी अनेक प्रमुख ग्रंथों का अच्छी तरह अध्ययन किया था । लक्ष्मी की तीव्र अभिलाषा थी कि उसका विवाह विद्याधर के साथ हो जाए । पर इसके माता-पिता को यह पसंद नहीं था ।

लक्ष्मी के माँ-बाप ने उसे समझाया — "बेटा लक्ष्मी, केवल एक बात को छोड़कर सभी विषयों में विद्याधर हमें पसंद है । पर वही बात सब से प्रमुख भी है । विद्याधर के पास धन-संपत्ति के नाम पर कुछ नहीं है । लेकिन विक्रमसिंह तथा कनकदास

अशोक श्रीवास्तव

के पुत्रों के संबंध में ऐसी बात नहीं है । वे भले ही बहुत पढ़ेलिखे न हों, पर आजीविका के लिए उनके यहाँ कोई कठिनाई नहीं है । कई पीढ़ियों तक वे आराम से अपनी ज़िंदगी बिता सकते हैं । तुम यह सभी अच्छी तरह से सोच लो ।"

इस पर लक्ष्मी ने कहा–"बाबूजी, हो सकता है, आप का कहना सच है । आप मेरी एक इच्छा की पूर्ति कर सकेंगे? आप ज़मींदार के पुत्र, व्यापारी के पुत्र तथा अध्यापक के पुत्र को हमारे घर आमंत्रित कीजिए । और तब उनको अलग-अलग बुला कर ये प्रश्न पूछिए । उनके उत्तर सुन कर आप ही निर्णय लीजिए कि उनमें से मेरे लिए योग्य वर कौन है?" फिर लक्ष्मी ने पिताजी को वे प्रश्न बता दिये जो सब से पूछने हैं ।

अपनी पुत्री की इच्छानुसार रामनाथ ने उन तीनों युवकों को अपने घर पर आमंत्रित किया । सब से पहले ज़मींदार के पुत्र को अपने कमरे में बुलाकर अपनी पत्नी व लड़की के समक्ष उससे प्रश्न पूछे–

"बेटा, क्या तुम अपनी ज़मींदारी के सारे मामलों को सुलझाने की क्षमता रखते हो? या तुम को इन मामलों में किसी और व्यक्ति पर निर्भर रहना पड़ेगा?"

ज़मींदार के पुत्र ने झट जवाब दिया–"ज़मींदारी के संबंध में सारे मामले मुझे जानने की क्या आवश्यकता है भला? ये सारे मामले देखने व संभालने के लिए हमारे यहाँ कई गुमाश्ते और नौकर जो हैं!"

"तुम धर्मनन्द के पुत्र विद्याधर को जानते ही हो । अगर लक्ष्मी ने तुम्हारे साथ विवाह किया, तो विद्याधर ने अनेक ग्रंथों का अध्ययन करके जो पांडित्य प्राप्त किया है, उसे तुम भी प्राप्त कर सकोगे?" रामनाथ ने दूसरा प्रश्न पूछा ।

ज़मींदार के पुत्र ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा–"यह कैसे संभव हो सकता है?"

अब रामनाथ ने जौहरी कनकदास के पुत्र को बुलाया और उसे भी वे ही सब सवाल पूछे । उसने भी कुछ ऐसे ही जवाब दिये जो ज़मींदार के पुत्र ने दिये थे ।

अंत में रामनाथ ने विद्याधर को बुलाया और पूछा–"तुम ज़मींदार विक्रमसिंह और जौहरी कनकदास को जानते ही हो । अगर

लक्ष्मी ने तुम्हारे साथ विवाह किया तो क्या तुम उनके बराबर धन-संपत्ति कमा सकोगे?"

विद्याधर ने हँसते हुए कहा—"पिताजी, उनके बराबर संपत्ति तो मैं शीघ्र ही कमा लूँगा!"

"यह कैसे संभव है?" रामनाथ ने विस्मय के साथ पूछा।

विद्याधर ने जवाब में कहा—"धन-संपत्ति और प्रतिष्ठा की दृष्टि से आप ज़मींदार तथा जौहरी के बराबर हैं न? आप की तो यही अच्छी है न, कि आप के होनेवाले दामाद उनके समान धनी बनें? लक्ष्मी तो आप की इकलौती पुत्री है। मैं जैसे ही लक्ष्मी से विवाह करूँगा, तो आप की सारी संपत्ति का वारिस न बन जाऊँगा? इस प्रकार धन-संपत्ति की दृष्टि से मैं ज़मींदार व जौहरी के समान बन जाऊँगा!"

यह उत्तर सुन कर रामनाथ को थोड़ा संतोष हुआ, उसने मंद स्मित करते हुए अपनी पुत्री की ओर देखा। इसके बाद विद्याधर कमरे से बाहर गया, तब लक्ष्मी ने अपने माँ-बाप से पूछा—"विद्याधर की बातें आप की समझ में आ गईं न पिताजी? मुझ से विवाह करने के बाद विद्याधर धन-संपत्ति के बारे में उन दोनों से किसी प्रकार कम न होगा। इसके साथ ही कभी नष्ट न होनेवाली विद्या-रूपी संपत्ति का अधिकारी तो वह है ही! ज़मींदार और जौहरी के पुत्रों के पास विद्या-धन नहीं है। अब आप ही सोच-समझ कर अपना निर्णय लीजिएगा।"

रामनाथ ने खुशी से कहा—"लक्ष्मी, तुम्हारा कथन बिलकुल सच है। ज़मींदार और व्यापारी के पुत्रों कसे पास केवल धन-संपत्ति है। विद्या का धन प्राप्त की उनकी योग्यता नहीं है। सुशिक्षित विद्याधर के पास दोनों संपतियाँ होंगी। अतः वही तुम्हारे लिए अधिक योग्य पति है। मेरा निर्णय है कि तुम विद्याधर के साथ विवाह कर सकती हो।"

इसके बाद एक शुभ घड़ी में लक्ष्मी और विद्याधर का विवाह बड़े ठाठ से संपन्न हुआ।

# बरगद की गवाही

किसी गाँव में नारायण गुप्त नाम का एक धनी आदमी रहता था । एक दिन वह अपने काम के लिए किसी अन्य गाँव जा रहा था । रास्ते में सोमदास नाम के एक आदमी ने उसको देखा । नम्रता के साथ उसने नारायण से पूछा—"महाराज, मेरी झोंपड़ी बहुत जीर्ण हो चुकी है । बरसात का मौसम शुरू होने के पहले अगर मैं झोंपड़ी की मरम्मत नहीं कर पाऊँगा, तो मेरे परिवार को संभवतः किसी पेड़ का सहारा लेना पड़ेगा । आप मुझे दो सौ रुपये उधार देने की कृपा करेंगे? अनाज बेचते ही मैं आपका कर्ज़ पाई-पाई चुका दूँगा ।"

नारायण गुप्त धनी होने के साथ साथ स्वभाव से बड़ा दयालु था । सोमदास को वह 'ना' न कर सका । उसने अपनी थैली से तुरन्त दो सौ रुपये निकाले और सोमदास को दे दिये ।

पर सोमदास ने अपने वचन का पालन नहीं किया । एक फ़सल कट चुकी थी, और दूसरी घर में आनेको थी । सोमदास ने कर्ज़ चुकाने का नाम नहीं लिया ।

ऐसे में एक दिन नारायण गुप्त ने सोमदास को बुलाया और प्रेमपूर्वक पूछा—"सोमदास, तुमने अब तक मेरा कर्ज़ नहीं लौटाया! एक साल तो कभी पूरा हुआ, दूसरा साल भी पूरा होने को है ।"

"आप यह क्या कह रहे हैं? कर्ज़! मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है । ज़रा साफ़-साफ़ कहिएगा?" सोमदास ने आश्चर्य में आकर पूछा ।

नारायण गुप्त ने कहा—"ज़रा याद करो, तुम्हें अपनी झोंपड़ी की मरम्मत करनी थी । हम रास्ते में मिले थे और मैंने तुम्हें दो सौ रुपये कर्ज़ दिया था । अब ऐसे बात कर रहे हो जैसे तुम्हें कुछ भी याद नहीं!"

२५ साल पहले चन्दामामा में प्रकाशित एक कहानी

''मैं भले ही भूल जाऊँ, आपके पास लिखा-पढ़ी का काग़ज़ तो होगा ही । उसे मेरे पास भिजवा दीजिए, उसके उनुसार मैं आपका कर्ज़ चुकाऊँगा ।'' सोमदास ने कहा । वह भली भाँति जानता था कि उसने गुप्ता साहब को कोई काग़ज़ लिख कर नहीं दिया है ।

नारायण गुप्त ने कहा—''तुमने कोई काग़ज़ तो मुझे लिख कर दिया नहीं । मैंने भी यह सोचकर तुम से काग़ज़ नहीं लिखवाया कि कुछ दिनों में कर्ज़ चुकानेवाले से काग़ज़-पत्र क्या लिखवा लूँ?''

''वाह गुप्ताजी, आप भले ही संपन्न परिवार के क्यों न हो, मुझको भोला और गँवार समझ कर मुझ पर कर्ज़ लाद रहे हैं?'' सोमदास ने डाँट कर पूछा ।

उनका यह वाद-विवाद सुन कर कई लोग वहाँ जमा हुए । सब ने दोनों से पूछा—''आखिर माजरा क्या है? आप दोनों किस लिए झगड़ रहे हैं?''

नारायण गुप्त ने सारी हकीकत सुना दी । पर सोमदास ने सब को झूठ कहा ।

आखिर गाँववालों ने सलाह दी—''यह मामला ग्रामाधिकारी ही निपटाएँगे । क्यों न उनके पास चलें?''

सोमदास ने कहा—''मुझे किस बात का डर है? मैं सब बात ग्रामाधिकारी को भी बता दूँगा ।'' सब लोग गाँव के मुखिये के पास पहुँच गये ।

गाँव का अधिकारी बड़ा ही अक्लमंद और
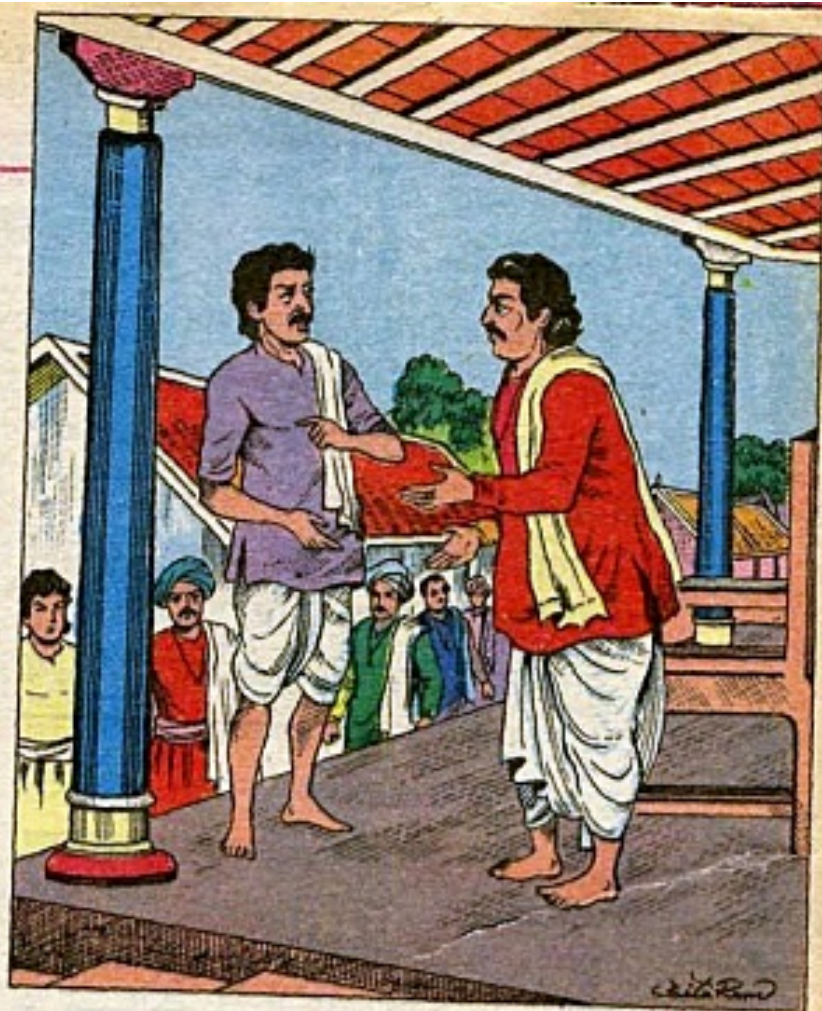
चतुर था । वह दूध का दूध और पानी का पानी करने में कुशल था । उसने नारायण गुप्त और सोमदास के तर्क शांति के साथ सुन लिये ।

सोमदास से कैफ़ियत माँगने पर उसने गुस्से में आकर कहा—''मैं भिखारी थोड़े ही हूँ? मुझे दो सौ रुपये कर्ज़ लेने की क्या गरज़ है? मैंने अपने खेत का धान बेच कर झोंपड़ी की मरम्मत करवाई, मालूम है? अगर नारायण गुप्त ने मुझे कर्ज़ दिया है, तो वे दो साल तक बिना लिखापढ़ी और गवाह के चुप क्यों रहे?''

''भाई साहब, उस वक्त वहाँ पर कोई था ही नहीं, एक बरगद के नीचे बैठ कर मैंने तुमको रुपये दिये थे ।'' नारायण गुप्त

ने कहा ।

ग्रामाधिकारी ने नारायण गुप्त से कहा—"तो फिर क्या? उस बरगद को ही हम अपना गवाह बना लेंगे । अभी जाकर उस बरगद से कह दो कि मैंने उसको यहाँ पर बुलाया है!"

"क्या बरगद का पेड़ आकर गवाही देगा?" नारायण गुप्त ने शंका प्रदर्शित की ।

अधिकारी ने कहा—"मैं आदेश दूँ, तो उसे आना ही पड़ेगा । आप चुपचाप जाकर उसे कह आइए । मेरा आदेश सुनाकर आप चले आइए । हम सब तब तक आपका इंतज़ार करते रहेंगे ।"

अधिकारी की बात सुन कर सब लोगों को बड़ा विस्मय हुआ । सोमदास तो बहुत ही खुश हुआ । वह मन-ही-मन सोचने लगा—अधिकारी का दिमाग़ खराब हो गया है । इस लिए उसके कर्ज़ लेने की बात साबित ही कैसे हो सकती है?

थोड़ी देर मौन रह कर अब अधिकारी ने सोमदास से प्रश्न किया—"सोमदास, क्या नारायण गुप्त अब तक बरगद के पास पहुँच गया होगा?"

सोमदास ने झट जवाब दिया—"उफ़! इतनी जल्दी वह वहाँ कैसे पहुँच सकता है? वह बरगद तो यहाँ से डेढ़ कोस की दूरी पर है । इसके अलावा बारिश हो गई है न? वह तालाबवाला रास्ता कीचड़ से भरा रहेगा । फिर वहाँ पर इतने बरगद के पेड़ हैं, जिनमें से उस बरगद को पहचानना आसान थोड़े ही है?"

इस पर अधिकारी ने सोमदास की पीठ पर छड़ी से दे मारा और गरजकर कहा—"अबे कम्बख़्त चोर! तो तुम यह भी जानते हो कि नारायण गुप्त ने तुम को किस बरगद के नीचे बैठकर रुपये दिये हैं!"

अधिकारी की कुशलता पर सब लोग मुग्ध हो गये । सोमदास ने कर्ज़ लेने की बात मान ली और नारायण गुप्त को ब्याज के साथ पूरा मूल-धन चुका दिया । उस दिन से सोमदास गाँव के लोगों के बीच सिर उठाकर चलने में भी शर्म का अनुभव करने लगा!

# चालाकी

गौरीगंज में गोविन्द नाम का एक आदमी रहता था । बड़ा चालाक था वह । एक बार गाँव के निवासियों ने एक मन्दिर बाँधने के लिये चन्दा वसूलने का काम गोविन्द को सौंपा ।

उस गाँव में रामसिंह और लक्ष्मणसिंह नाम के दो बड़े व्यापारी थे । जुड़वा भाई होने के कारण लोगों को यह पहचानने में हमेशा दिक्कत होती थी, कि कौन राम और कौन लक्ष्मण!

गोविन्द पहले लक्ष्मणसिंह के घर पहुँचा । लक्ष्मणसिंह ने गोविन्द से कहा, "महाराज, आप को तो पहले बड़े भैया रामसिंह से मिलना चाहिये था ।"

"गुण में छोटे व बड़े का सवाल ही कहाँ उठता है? दानशूरता में इस गाँव में आप की बराबरी कौन कर सकता है भला? चन्दा देने वालों की सूचि में आप का नाम ही सब से अग्र में होना उचित होगा न?" गोविन्द बोला ।

गोविन्द की इस चिकनी चुपड़ी बातों में आकर लक्ष्मणसिंह ने बड़े उत्साह से एक सौ सोलह रुपये देकर गोविन्द को बिदा किया ।

दूसरे गोविन्द रामसिंह के घर पहुँचा और बोला, "आप तो बड़े भैया हैं । पहले मुझे आप के ही पास आना चाहिये था । भूल से मैं आप के छोटे भाई के घर पहले गया । उन्होंने मेरे हाथ पर एक सौ सोलह रुपये धर कर पूछा, –"क्या यह रकम पर्याप्त है? –चाहे जो हो, बड़े तो हमेशा बड़े ही होते हैं और छोटे, छोटे! आप मन्दिर के लिये अपनी हैसियत के मुताबिक चन्दा दीजिये ।"

"सब लोग जानते हैं कि आप बड़े ही चालाक हैं । मगर आप जैसे समझते हैं, मैं राम नहीं लक्ष्मण हूँ । बड़े भैया स्नान कर रहे हैं । उनके बाहर आने पर उनकी तारीफ़ के पुल बाँधिये । तब तक बैठ जाइये इस कुर्सी में ।" लक्ष्मणसिंह ने मुस्कुराकर कहा ।

बेचारे गोविन्द ने तब समझ लिया, कि अपनी चालाकी सब के पास हमेशा काम नहीं दे सकती ।

# सोने की फ़सल

जावा द्वीप में डोंगो नाम का एक अनाथ ग़रीब युवक रहा करता था । एक विधवा के यहाँ काश्तकारी करते हुए वह उसके खेत में भी काम करता था । खेत बड़ा ही उपजाऊ था । फिर भी डोंगो ने जिस साल उस खेत को जोता, उस साल सारा अनाज थोथा ही निकला । फ़सल तो खूब बढ़ी थी, भुट्टे भी खूब अच्छे लगे थे उसमें । लेकिन दँवरी करने पर सारी फसल थोथा ही निकल आयी । उस में से एक भी बीज नहीं निकला ।

दूसरे वर्ष भी यही हाल रहा! गाँव के लोगों में कानाफूसी होने लगी, खेत की मालकिन बड़ी कंजूस है, ग्राम-देवी को भी ठीक से नैवेद्य नहीं चढ़ाती वह । इसी से उसकी फसल बेकार होती जा रही हैं ।—ये बातें आख़िर उस विधवा के भी कानों में पड़ी । बहुत नाराज़ होकर उसने डोंगो को काम से हटा दिया । उसको निकालते वक्त विधवा ने उसके हाथ पर एक कौड़ी तक नहीं रखी ।

डोंगो बेचारा भूख से तड़पता हुआ गाँव छोड़कर चला गया । एक दिन शाम को वह किसी दूसरे गाँव पहुँचा और गाँव के बाहर ही बसे एक घर के दरवाज़े पर उसने दस्तक दी । इस घर में भी एक विधवा ही रहती थी । उसके दरवाज़े से सटकर खड़ा डोंगो एकदम लुढ़ककर ज़मीन पर गिर पड़ा । दीन स्वर में वह बोला, "माई, एक कौर खाना दो, मेरी जान निकल रही है ।"

डोंगो को हाथ का सहारा देकर वह स्त्री मकान के अन्दर ले गयी और उसने उसे खाना खिलाया । उसने बाद में पूछा, "तुम तो स्वस्थ दिखाई देते हो; भीख माँग कर खाने की क्या ज़रूरत है तुम्हें? मेहनत कर के अपना पेट पाल सकते हो न?"

इस पर डोंगो ने अपनी पूरी रामकहानी

जावा की लोककथा

सुनाकर कहा, "मैंने कड़ी मेहनत की । और कोई होता तो इतनी मेहनत नहीं कर पाता । बालों में बीज न लगे, तो वह क्या मेरा दोष है? न मालूम खेत की उस मालकिन ने कैसा पुण्य जोड़ा होगा!"

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है बेटे! मेरे यहाँ भी छोटासा खेत है। तुम अगर खेतीबाड़ी का काम करना चाहो, तो खुशी से करो । जो फ़सल होगी उस में तुम पाँचवा हिस्सा ले लो । लेकिन हमारे यहाँ बैल-भैंसें नहीं है, खेत भी छोटा ही है । तुम को सब प्रकार के खेती के काम करने पड़ेंगे । तुम्हारी मदद करनेवाला कोई न होगा । क्या यह सब तुमसे बन पड़ेगा?" विधवा ने पूछा ।

"कोई बात नहीं, मैं अपनी सारी ताक़त लगाकर खेती करूँगा । वहाँ भी तो मैं सारे काम अकेला ही करता रहा । मेहनत करनेका मैं आदी हूँ ।" डोंगो ने काम स्वीकार किया ।

दूसरे दिन सबेरे ही कुदाल-फावड़ा लेकर डोंगो खेत में पहुँचा । सारा खेत उसने यूँ खोद डाला, जैसे हल चला हो । ठीक वक्त उसने फ़सल की रोपाई की । फ़सल अच्छी तरह बढ़ती गयी और उस में अच्छी अच्छी बालें निकल आयीं । उनका रंग स्वर्णिम सा हो गया ।

लेकिन फ़सल का समय निकट देख डोंगो जब खेत में पहुँचा और उसने दो एक बालों को मसलकर देखा, तो वे सब थोथे निकले । उन में चावल के बीज नहीं थे!

"शायद यह सब मेरी बदकिस्मती की वजह ही हुआ है । जो भी मुझे काम देते हैं,

उन लोगों के नसीब में शायद यही लिखा होता है ।" यह सोचकर बेचारा डोंगो हताश हो गया । मालकिन को यह ख़बर सुनाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई । फसल की कटाई के बाद यह बात उसे अपने आप मालूम हो जाएगी ।

यह सोचकर कटाई के एक दिन पहले ही डोंगो ने घर छोड़कर कहीं चले जाने का निश्चय किया । सबेरा होने से पहले ही वह बिस्तर से उठा और दबे पाँव बाहर निकल पड़ा । कड़ी मेहनत से जो फ़सल पैदा की वह खेत आख़री बार देख लेने के इरादे से वह खेत पर पहुँचा । उसने एक बाल तोड़कर मसल दी । उसमें से चावल के दाने नहीं निकले, बल्कि सोने के पतले बीज जैसे दाने निकल आये!

डोंगो अपनी आँखों पर विश्वास ही न कर पाया । लगातार उसने कई धान मसल डाले, मगर आश्चर्य की बात रही, कि सब में सोने के दाने निकले! असली सोने के दाने! सोना दिखाने दौड़ा दौड़ा वह घर पहुँचा ।

"अरे बेटा, बात क्या है? इतने खुश क्यों नज़र आ रहे हो? कहाँ गये थे इतनी जल्दी?" मालकिन ने पूछा ।

"माईजी, हमारे खेत में सोने की फ़सल हुई है । देखिये यह सोना!" उत्साह से भरकर डोंगो ने सोने के दाने मालकिन के सामने धर दिये ।

डोंगो की बातें सच ही निकलीं । फ़सल की कटाई कर धान की बालें रौंदने पर सोने के दानों का ढेर बन गया । मालकिन ने अपने वचन के अनुसार पाँचवा हिस्सा डोंगो को दे दिया और गाँव के सभी लोगों को आमन्त्रित कर अच्छी खासी दावत दी ।

डोंगो को सोने का जो हिस्सा मिला, उससे उसने कुछ खेत खरीदे । उनकी देखभाल भी वह अपने खेतों के साथ करता रहा । खेंतों में काम करनेवाले मज़दूरों को वह फ़सल का पाँचवा हिस्सा देता गया । तब से जावा में खेत मज़दूरों को पैदावर में पाँचवा हिस्सा देना, एक रिवाज़ बन गया ।

## प्रकृति के आश्चर्य :

### सालमन मछलियाँ

### गिरगिट

सब प्रकार के परिसरों के अनुरूप अपना रंग बदलने वाला प्रकृति का प्राणी गिरगिट है। माना तो ऐसा जाता है, मगर बात सही नहीं है! क्योंकि वह कुछ खास प्रकार के परिसरों के अनुकूल बैंगनी व हरे रंगों में ही अपना रंग बदल सकता है। उसके चर्म के कणों का रंग बदलने के कारण ही संभव होता है।

### अत्यन्त प्राचीन जीवित वृक्ष

विश्वभर का अत्यन्त प्राचीन वृक्ष कालिफोर्निया के श्वेत पर्वत में स्थित है। ब्रिसिलकोनपैन नाम से पहचाना जानेवाला यह वृक्ष एक प्रकार का साल वृक्ष है। इसकी आयु ४,६००० वर्ष की है।

भारत का सब से अधिक बिकनेवाला कैमरा
Snapper
Snapper 35
Snapper 300
Snapper 300 F
Snapper 110 E
स्नैपर आपके पैसे की बेहतर कीमत चुकाता है. मॉडलों की विस्तृत श्रेणी, और ऐसी अनोखी विशेषताएं जो इसे एक लाजवाब कैमरा बनाती हैं. इसीलिए, किसी भी और कैमरे के मुकाबले, स्नैपर ज्यादा लोगों की मुस्कान की पहचान है.
Snapper कैमरे
मुस्कान की पहचान!
एग्फा-गेवर्ट इंडिया लिमिटेड द्वारा मार्केट किया गया
ULKA-12449 HIN

# फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५० )

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जनवरी १९९० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

A. L. Syed

S. B. Takalkar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

---

## सितम्बर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो: नन्हें कदम, बढ़ते हरदम!

द्वितीय फोटो: आओ चले हम, हंसते हरदम!!

प्रेषक: राजन मित्तल, द्वारा कैलाश मित्तल, बी. डी. हाईस्कूल, अम्बाला कैंट, (हरियाणा)


## चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा: रु. ३६-००

चन्दा भेजने का पता:

डॉल्टन एजेन्सीज, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये:

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.


---

# देखें आप कितने होशियार हैं...

हमने यह पहेली शकुनी मामा से पूछी. मगर वो सिर्फ़ भेदभरी मुस्कान छोड़कर चलते बने.

आइए, अब यही पहेली आपपर आज़माएं.

नीचे के स्थान को ध्यान से देखिए.

अब बताइए, क्या आप पूरी महाभारत इस सीमित स्थान पर लिख सकते हैं?

हाँ भई, आप कॅम्लिन पेंसिल को इस्तेमाल कर सकते हैं और दुनियाभर की तिकड़म भी लगा सकते हैं.

मगर कृपा करके सोचने में १२ साल न लगाइएगा.

**कॅम्लिन फ्लोरा पेन्सिल**

समझदार बच्चों के लिए.

camlin FLORA® ERASER TIP

camlin FLORA pencils. With Eraser Tip.

जवाबः दर असल आपको सिर्फ़ एकही शब्द 'महाभारत' लिखना है...
कहिए क्या जगह कम पड़ी?

Avenues CP 13:89

CHANDAMAMA (Hindi)
November1989
Regd. No. M. 5432
मीठी-मीठी बात आम-बगिया के
मिट्ठू के साथ
ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!
ए देख! मेरी नई मैंगो स्वीट!
बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!
बताऊँ मिट्ठू! इसमें असली आम है!
शुSSSSSप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!
शुSSSSSप बदमाश! मेरी एक-नई मैंगो स्वीट खाकर देख!
पता है? इसका नाम क्या है? (????)
आम-रस!
क्या कहा! फिर बताना. (????)
आSSSSSम-रSSSSSस! बस. बच्चू! अमृत वचन बार-बार नहीं बोले जाते!
ही... ही... ही!
न्यूट्रीन
आम-रस
अंदर असली आम बंद. बाहर अपार आनंद ... हरेक में. मिट्ठू जैसे रंग-बिरंगे पैक में.
असलियत में असली आम
THE FINEST, WIDEST RANGE
nutrine
India's largest selling sweets
Visesh/NC/8940/Hin